अमरेन्द्र

गेना

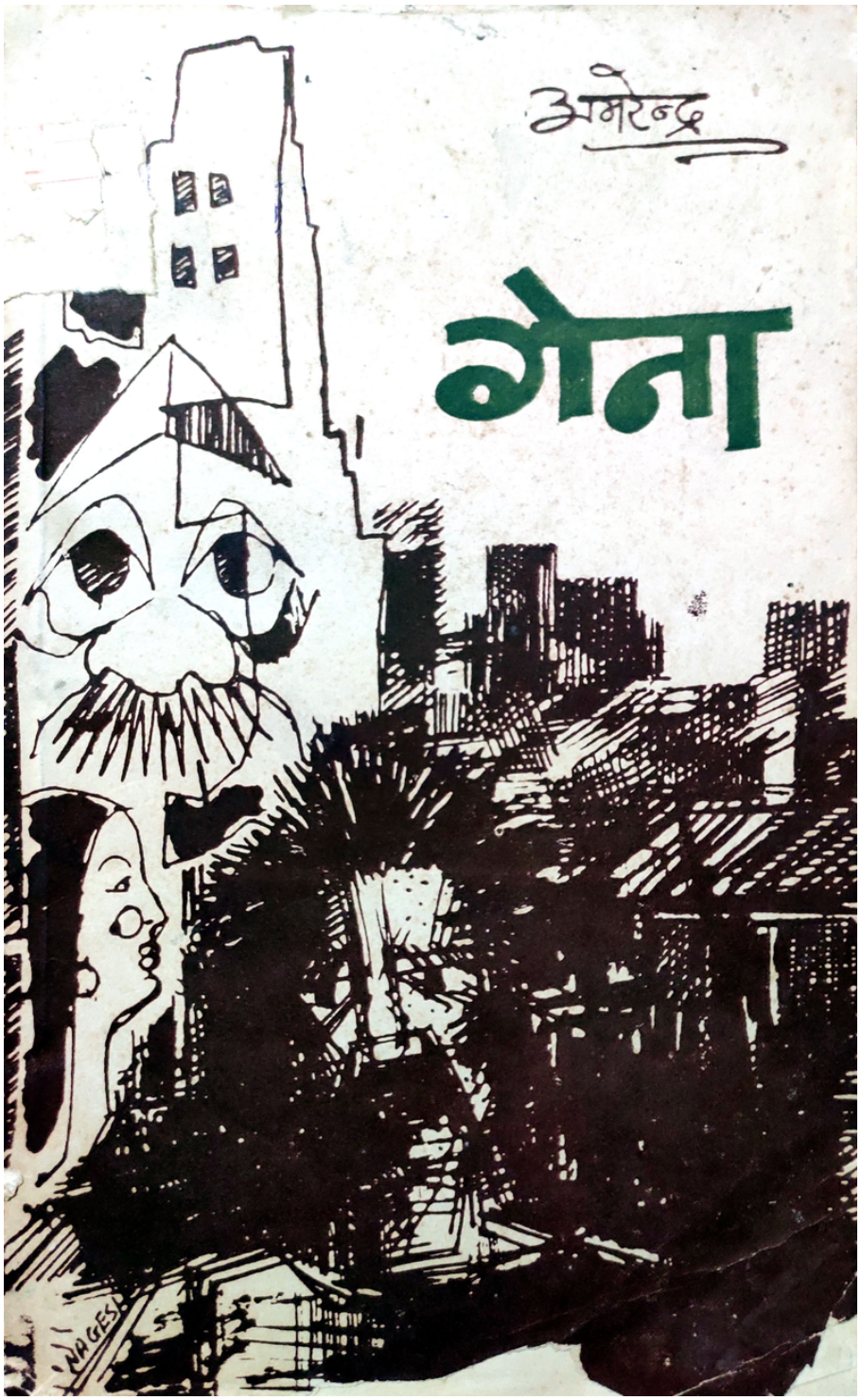

गेना

अंगिका प्रबन्ध काव्य

गेना

अंगिका प्रबन्ध काव्य

अमरेन्द्र

प्रकाशक
समय साहित्य सम्मेलन
पुनसिया, भागलपुर (बिहार)

काव्य : गेना
कवि : अमरेन्द्र
प्रकाशक : समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, भागलपुर (बिहार)
सर्वाधिकार : कुमार संभव
संस्करण : ई. १९९५
मुद्रक : ऐक्यूरेट प्रिंटर्स, भागलपुर
दाम : २० टका

GENA (Poems) By : Dr. Amrendra

जीतू

के अनन्त विछोह आरो चिर स्मृति में

ई काव्य के बारे में—

बात अस्सी सें शुरू होय छै । गेना कें हम्में रोजे देखियै । खास करी कें हटिया के दिन; हटिया कें घामें घमजोर साफ करतें । एक रोज जेठ के दूपहरिया में हटिये साफ करतें गेना हमरा ऐतें देखी कें रुकी गेलै—धुरदा के झोकों हमरों कपड़ा आरो देहों सें सट्टी जे जैतियै । ई घटना दू, एक रोजों में रहि-रहि कें याद आविये जाय आरो हमरा याद छै कि जब ताँय केकरौ ई बात हम्में सुनाय नै दियै, ओकताहट हेनों बुझैतें रहै । मतुर हमरों ई बात कें खाली प्राण मोहन बाबुए मोंन लगाय कें सुनै । की जानौं—खग जानै खग की ही भाखा । हुनियो ई घटना सुनी कें बाते बात में गेना रों ढेर-ढेर किस्सा सुनाय दै आरो फेनू कहै 'अमरेन्द्र बाबू एकरा पर एकठो कविता लिखों ।' हम्में कहियै कविता तें नै, एक कहानी कहियो जरूर लिखबै ।

बहुत दिनों के बाद कहानी के जग्घा में हम्में खड़ी बोली में गेना पर एगो छोटों रँ कविता लिखलयै । ग्रीष्म खंड में शुरू सें लै कें सोलहमों पंक्ति तक वही कविता छेकै, जेकरों हम्में अंगिका अनुवाद करी देलें छियै । आरो फेनू तीन बरस बाद शुरू होय वाला ई प्रबन्ध में एकरा राखै के, आरो शुरुवे में राखै के की मतलब हुऍ पारें ? शायत यही कि ई कविता हमरों एक अन्तेवासिनी कें ऐत्तै पसन्द छेलै कि ओकरों ऊ खुशी सें जबें हम्में, आय गेना कें सौंसे रूप में छपलों देखी के आपनों खुशी सें मिलान करै छियै, तें पहिलके भारी लागें लागै छै । जे भी हुऍ ।

बात आधों तेरासी के आसपास के या ओकरों बाद के छेकै । हम्में अंगिका रों सुकुमार कवित्त के कवि अनिल शंकर झा साथें सम्पादक केदार नाथ शर्मा रों आदमपुर वाला क्वाटर में कोय कामों सें गेलों छेलियै । सुनै, सुनाय रों शौकिन अनिल जी के कहला पर हम्में दुवे दिन पहिलें रचलों आपनों एगो

अंगिका कविता 'वर्षा-वर्णन' सुनैलियै, जे हू-ब-हू वर्षा-खंड मेँ हम्में शुरुवे मेँ राखी देलेँ छियै, यानी पहिलोँ पंक्ति 'पानी सेँ ढलमल' सेँ लै केँ 'बेटी रोँ भीजै छै प्राण' तांय के पंक्ति । काफी सरहैलकै हुनी आरो फेनु अनिल जी के ही पूछला पर, ''की ई कोनो खण्ड काव्य के अंश छेकै ?'' हम्में कहलियै—'नै'; बातो यही छेलै । मतुर तखनिये यहू मूँ सेँ निकललै—''बहुत बरसोँ सेँ सोची रहलोँ छियै—गेना काव्य लिखै के, नै होलै तेँ ई वर्षा-वर्णन वही मेँ जोड़ी देवै ।'' ई सुनी केँ अनिल जी ठठाय गेलोँ छेलै । ई घटना के लगभग सात महीना बाद गेना केँ लिखबोँ शुरू भेलोँ छेलै । आरो शुरू भेलै वही वर्षा-वर्णन सेँ । 'वर्षा-खण्ड' पूरा होला पर ही शुरू भेलै 'गर्मी खण्ड'; तब आरो जेना कि छै । मतुर जेन्होँ कि हमरा याद छै, गेना लिखै में हम्में शायते हफ्ता-हफ्ता भरी नागा करलेँ होवै आरो जहाँ तक कि ई काव्य के पूरा होय के बात छै, ऊ तेँ साल पचासी के महिना सितम्बर तांय ही भै गेलोँ छेलै । मतुर ई अंत हमरोँ ओरी सें छेलै ।

नवासी के बात छेकै । गेना के कै एक खण्ड हम्में सदाशिव सुगन्ध रोँ संकेत पावी केँ अंग्रेजी महिना के जनवरी अंक के 'शिरीष कथा' में छापलियै, जेकरा पढ़ी केँ महाकवि पं. अवध भूषण मिश्र ने (भागलपुर रहै के दौरान) हमरा ई काव्य के बारे में कुच्छू आरो सुझैलकै । ऋतु-निर्णय लै केँ भी बात होलै । मतुर हुनकोँ बात केँ हम्में ई कही केँ स्वीकार नै करेँ पारलियै कि हेनोँ हम्में जानी केँ करलेँ छियै । फेनु हमरा सें ई काव्य के सर्ग के बारे में जानी केँ हुनी दू सर्ग आरो बढ़ाय दैलेँ कहलकै । हुनी चाहै छेलै—गेना रोँ बचपन भी आबी जाय आरो हम्में सात सें ज्यादा बढ़ाय के पक्ष में नै छेलियै । 'बसन्त खण्ड' में तेँ गेना रोँ बचपन केँ हम्में उतारिये चुकलोँ छेलियै । मतुर पंडित जी रोँ बात हम्में भूलेँ नै सकलियै। आधोँ फरवरी के शुरू सें 'जन्म-खण्ड' आरो यही महिना के अन्त होतेँ-होतेँ 'विपद-खण्ड' भी पूरा भै गेलै । खण्ड के अन्त भी कुछ हेनोँ ढंग से भेलै कि दुसरा केँ एकरोँ पीछू-आगू के पता नै चलेँ। हमरोँ दिली इच्छा एक्के रहै कि ई प्रबन्ध में सिरिफ छः खण्ड रहेँ, छः ऋतु के नामोँ पर, जेकरा में ऋतु के अनुसार नायिका रोँ विरह नै, गेना रोँ ऐठलोँ जिनगी के दुख दिखैलोँ जाय । मतुर 'नगर खण्ड' पहिलै सें जुड़ी चुकलोँ छेलै, से 'जन्म-खण्ड' आरो 'विपद-खण्ड' जोड़ै में हमरा ज्यादा सोचै लेँ नै लागलै ।

किताब रूपोँ में गेना के छपना भी नवासी के जनवरी से ही प्रारम्भ भै गेलोँ छेलै, मतुर ई पूरा-पूरा छपी केँ निकलेँ पारी रैल्होँ छै नब्बे के चैत-बैशाख में। जोँ काव्य में शुरू के दू खण्ड नै जुटतियै, तेँ ई काव्य भी चैत-बैशाख सें ही शुरू होतियै—बड़ा कष्ट दै वाला दिन । गेनाहौ केँ ई प्रकाशित रूपोँ तक लानै में हमरा

हेने दिन के दुक्खों के बीचों सें गुजरै लें लागलों छै; मतुर सदाशिव सुगन्ध रो बल्लो तें यहें दिनों में खूब मिललों छै ।

चाहै जोंन ढंग से भेलों हुऍं, ई काव्य शुरू करै वक्ती हम्में केन्हौं कें नै सौचलें छेलियै कि जोन गेना कें हम्में उठाय रहलों छियै, ऊ ऋतु में तें की, महाकाव्य में भी नै समाबें पारें । ऊ तें बामन रों पता हमरा तबें चललै, जबें ओकरों डेग उठलै आरो हम्में ऊ चित्र कें उतारै के असमर्थता में , ऊ सब खाली आपनों मनों में गोछियाय-गोछियाय कें राखी लेलें छियै—सामरथ भेतै तें लिखबै।

बहुत कुछ के बादो, ई काव्य नवासिये के अन्त ताँय निकली गेलों रहैलियै, मतुर यही बीचों में हठात भयानक दंगा सें दानी कर्ण आरो बासू पूज्य रों स्पर्श से निर्मल भेलों अंग देश उतरी पिन्हलो एक हेनों आदमी नाँखी दिखाबें लागलै, जेकरों सामने मे ओकरों माय-बाप, बेटा, पतोहू आरो भभोहू सभ्भे जललों छेलै । हम्में चुपचाप आपनों कोठरी में गेना के पांडुलिपि निकाली-निकाली ओकरों 'नगर-खण्ड' कें उठी-बैठी कें पढ़तें रहियै,

''लड़ै के छेकै गरीबी सें, लड़तै नै
अच्छा जे रस्ता छै ओकरा पर बढ़तै नै
लड़ै के छेकै मनुक्खों के दुश्मन सें
लड़ै छै कुरमी से, कैथो सें, बाभन सें
''आपने नै चेत तबें लोगें लड़ैतै नै
उच्चों-अछूतों के खोड़ा पढैतै नै
लड़ौ, तें हमरा की ? लेकिन है लड़ला सें
राकस के रस्ता पर जानी कें बढ़ला सें
होतै की? लड़तै सब, लोगों के नाश होतै
घरती पर भूतों-पिचासों के बास होतै
लोगो के रहतै बस एक्के कहानी ही
लागतै बुझव्वल रें एकदम पिहानी ही
''घरों में बाघों के, बानर के बास होतै
मन्दिर में देवों ठाँ राकस के रास होतै
होतै तें हमरा की ? हमरो के मानै छै ?
कथी लें उच्चों-अछूतों कें ध्यानै छै ?
ध्यानौ, तें हमरा की ! लेकिन है ध्यानला सें
लोगे के लोगो में भेदभाव मानला सें
लड़थैं ही रहतै सब आरो गरीबी ई

जाबेॅ नै पारेॅ छै केन्हौं केॅ आभी ई
"राजा तेॅ चाहतै छै, लड़ौ कोय बात लै
मुँहोॅ मेॅ धरमोॅ केॅ, माथा मेॅ जात लै"

आरो ई सोची केॅ मोॅन बड़ी कलपित्तोॅ होय उठै कि चौरासी मेॅ जे बात गेना सोचलकै, ऊ नवासी के अन्त होतेॅ-होतेॅ घटी गेलै । आचरज भी हुऐ । की गेना एत्तेॅ बड़ोॅ भविष्यवक्ता ? केना केॅ गेना देखी लेलकै ई सब ? की वैं ई सचमुचे मेॅ जानी लेलेॅ छेलै कि राजा सेॅ लेकेॅ देव-पित्तर तक सब आपने रँ वास्ते सोचै छै, बड़के वास्तें । छोटका के ई सब कोय नै । आरो हम्मेॅ सचमुचे मेॅ तखनी मतरछिमतोॅ हेनोॅ करेॅ लागियै, ई सोची केॅ कि कैन्हें नी गेना नेॅ कबीर नाँखी चौंक-चौराहा पर घूती-घूमी केॅ यही आपनोॅ बात तखनिये कहना शुरू करलकै ? जे काम बाद मेॅ ई काव्य के अन्तिम अंश मेॅ हुऐ छै । एकरोॅ दुख बनले रहतै ।

आरो आखिर मेॅ यही कही केॅ रुकै लेॅ चाहै छियै कि 'बसंत खंड' के हरिगीतिका वाला अंश भी नवासी के पझैतेॅ सारा पर खाड़ोॅ होय केॅ भविष्य के शांति हेतु करलोॅ गेलोॅ शान्ति-पाठ नाँखी ही छेकै । ई अंश यै वास्ते भी जोड़ना जरूरी भै गेलोॅ छेलै कि निर्दोष मिलन के घोर सुखद बेलाहौ मेॅ गेना खाली भीतरे भीतर भीगेॅ, 'आरो कुछ नै बोलेॅ, तेॅ ई अन्त कतेॅ छुछ्छुम लागतियै ।

ई बात हमरा तभियो लागै, जेना केॅ अइयो, कि ई सब होला के बादो जेना कुछ बची गेलै, कहै लेॅ । मतुर सब लोभोॅ केॅ रोकतेॅ हुऍ, हम्मेॅ नै खाली राहुल नाँखी गेना केॅ ही पाठक रोॅ संघ मेॅ दै रहलोॅ छियै, बलुक अपना केॅ भी कुछू समर्थ करै वास्ते, सोची-समझी केॅ, वही संघोॅ मेॅ दै रहलोॅ छियै, ई कहतेॅ हुऍ 'संघं शरणं गच्छामि ।'

—अमरेन्द्र
हिन्दी विभाग
सी. एन. डी. कॉलेज
बौंसी, भागलपुर

शुक्लपक्ष, बैशाख, त्रियोदशी
(सन् १० ई.)

सर्ग-सूची :

पहलोॅ सर्ग (जन्म-खण्ड) ११
दूसरोॅ सर्ग (विपद-खण्ड) १४
तेसरोॅ सर्ग (ग्रीष्म-खण्ड) १८
चौथोॅ सर्ग (वर्षा-खण्ड) २४
पाँचमोॅ सर्ग (शरत-खण्ड) २९
छठमोॅ सर्ग (शिशिर-खण्ड) ३५
सातमोॅ सर्ग (नगर-खण्ड) ४३
आठमोॅ सर्ग (पतझड़-खण्ड) ५८
नवमोॅ सर्ग (वसन्त-खण्ड) ६६

जन्म-खण्ड

जों बसन्त मेँ गाछी के ठारी सेँ निकलै टूसा
चतुरदशी के बाद सरँग मेँ विहँसै चान समूचा
बितला शैशव पर जों आबै मारलेँ जोर जुआनी
जेठोँ के सुखलोँ चानन मेँ जों भादोँ के पानी

जिना जुआनी के ऐला पर आबै लाज-शरम छै
लाज-उमिर के ऐथैं युवतीं पाबै पिया परम छै
पिया परम के पैथैं जेना सुध-बुध खोय छै नारी
ढोतेँ बनै नै केन्हौँ ओकरा सुख के बोझोँ भारी

जेना सौनोँ मेँ पछिया के उठथैं चलै झकासोँ
बेली के खिलथैं गंधोँ रोँ ठाँव-ठाँव पर बासोँ
जों समाधि के लगथैं अजगुत सुख केँ पाबै तपसी
तपला घरती के बादोँ मेँ जेना आबै झकसी
आय वहेँ रँ कादर-पट्टी झूमै झन-झन बाजै
डलिया-सुपती-मौनी-थरिया किसिम-किसिम के साजै
बरस-बरस के बितला पर लपकी बनलोँ छै माय
सौंसे पट्टी रोँ मौगी सब गेलोँ छै उधियाय

करका, कच्चा माँटी रोँ बुतरू रँ बुतरू भेलै
भोज-भात के नेतोँ-पानी द्वारे-द्वार बिल्हैलै

गोबर कें पानी में घोरी द्वार-भीत पर लीपै
कोय ऐंगन के मिट्टी के धुरमुस सें लै कें पीटै

छपरी के छौनी होलों छै नया डमोलों लै कें
लपकी रों मरदाना खुश छै बाप पूत रों भै कें
करिया-करिया छौड़ी-छौड़ा कादर रों हुलसै छै
देखी कें लपकी रों मरदाना के दुख झुलसै छै

गीत-नाद के कंठों पर की टन-टन टीन टनक्का
काँसा के थरिया पर बाजै झन-झन-झनक झनक्का
बहुत दिनों के बाद कदरसी अजगुत करै छै खेल
टोला भर रों मौगी के माथा पर देखलौं तेल

देखी-देखी गोद रों बच्चा लपकी हेनों विभोर
आशिष दै छै खनै-खनै में; इस्थिर रहै नै ठोर
मूँ कें चूमै, गाल कें चूमे, माथा चूमै लपकी
सुतलों ममता हिरदय के हेनों उठलों छै भभकी

देखै तें देखै में पिपनी सुय्यो भरी हिलै नै
देर-देर तांय पोंल बेचारा अलगे रहै, मिलै नै
छूवै छै गुदगुदों तरत्थी, देह-तलवा कें छूवै
बुतरू बदला मय्ये कें गुदगुदी बदन में हूवै

आरो कभी झुकी कें अपनों सीना में लै-लै छै
पोखरी पर जों सांझ झुकी कें कमल हृदय में राखै
जत्तें कि लेरुआ देखी नै गय्यो कभी पन्हाय छै
दूध बही कें साड़ी कें सरगद्दों करलें जाय छै

घर-घर पीछू लपकी रों बस भाग सर्हैलों गेलै
कारों पत्थर के पुतला रँ गेना गोद में खेलै

कत्तेॅ दिन ताँय गीत-नाद के भेलै धूम-तमाशा
लपकी रोॅ दरवाजा सब रोॅ बनले रहलै बासा

बहुत दिनोॅ ताँय बुतरू-उतरू चुनमुन शोर मचैलकै
कोय बोकटोॅ कोय कोबोॅ भर लै धुरदा मिली उड़ैलकै
रात-रात भर लपकी रोॅ घर होतेॅ रल्है इंजोर
दीखै दम्पत्ति केॅ दुनियाँ एकदम हरा कचोर

बाप बनै छै घोड़ा, बैठी गेना टिकटिक बोलै
माय रोॅ गोड़ोॅ के झुलवा पर ऊपर-नीचेॅ झूलै
बढ़लोॅ गेलै माय-बाप रोॅ हँसी-खुशी संग गेना
बीस बरस रोॅ भेलै कहिया, केकरौ ज्ञात नै केना ।

विपद-खंड

धरती पर के कवि जनमलै ? केकरा साहस पास
बड़ा कठिन छै सबटा लिखना गेना रोॅ इतिहास
गिनना की केकरौ सेँ सम्भव छै चानन के बालू
गेना रोॅ दुख कहला सेँ पहिले सट्टै छै तालू
कलम उठैथैं कानेॅ लागै पापहरणी के पानी
दरकेॅ लागै भुइयाँ-भुइयाँ सुनथैं करुण कहानी
हुहुआबेॅ लागै छै दुख सेँ हवौ तुरत उनचास
कपसी-कपसी कानेॅ लागै धरती संग आकाश
गेना रोॅ दुख हेन्हे छै कि सुनथैं धर्य छुटै छै
माय रोॅ छाती की फटलै, मंदारो जाय फटै छै
सृष्टि बड़ी हैरैलोॅ लागै, चेहरा करुण उदास
बड़ा कठिन छै सबटा लिखना गेना रोॅ इतिहास
बीस बरस रोॅ होथैं गेना हेनोॅ ओझरैलै कि
सूतो नै ओझराबै । सोचै—जिनगी भेलै ई की !
इक्कीसो नै गेलोॅ होतै, गेलै सुख सब मौज
गेना रोॅ जिनगी के गढ़ केॅ तोड़ै दुख रोॅ फौज
जेठ-दुपहरिया के दिन छेलै जंगल मेँ जखनी कि
बाबू लकड़ी काटै छेलै, बाघें लेलकै लपकी
गूंजै छै कानोॅ मेँ अभियो बाबू-माय रोॅ शोर
गेना रोॅ जिनगी मेँ ढुकलै विपद बनी केॅ चोर

जगह-जगह में सेंध लगैनें दुख सब ढुकले गेलै
मिली-जुली दुख गेना कें छै गेंद बनाय कें खेलै
बाबू के मरथैं मय्यो रों हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
कभी कहै छै,'दौड़ें बेटा, बाघ उतरलों छौ रे
जो-जो रे बीजुवन बेटा, बाप गेलों छौ भोरे
'तोहरों बाबू रे बेटा नेहों रों अजगुत खान
हमरों सुख नै देखलों गेलै, दुष्ट भेलौ भगवान''
कुछ-सें-कुछ फदकै, बोलै छै, हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
ठाँय-ठाँय ठोकै चोखटी सें घुरी-घुरी माथों कें
लपकीं छाती पर पटकै छै पीटनैं रँ हाथों कें
दौड़ी कें गेना रों गल्ला सें लिपटै छै माय
दुख सें चीखै रही-रही कें; जों, रम्भाबै गाय
गुदड़ी-गुदड़ी करी लेलें छै चेथरी-चेथरी साड़ी
चूल नोची कें धामिन लागै; आँख निरासै फाड़ी
सौ विधवा रँ असकल्ले ही माय कानै छै, कुहरै
गेना रों आँसू ई देखी-देखी छलछल टघरै
कभी कहै छै, ''प्राण जरै रे, बेटा सुलगौ देह !''
कटलों पाठा रँ तड़पै छै, करै दर्द से ''एह !''
''सुन्नों-सुन्नों लागै रे संसार वृथा श्मशान
सारा दही सजाय रे हमरों कोखी के सन्तान
''हमरे पाप विषैलौ बेटा, बाघें खैलकौ बाबू
जहर खिलाय कें मारी दे रे, जीत्तों हम्में आभू !''
टोला भर रों जोंर जनानी कस्सी पकड़ै माय
लेकिन कसलों मुठ्ठी सें मछली रँ छिलकी जाय
पाँच बरस तक हेनै बितलै, कब ताँय आखिर जीतयै ?
चेथरी-चेथरी चुनरी कें सूय्याँ से बैठी सितयै ?
भोर उठी रहलों छेलै, लपकी रों साँझ उतरलै
गेना-जिनगी में जेठों के धूप दुपहरिया भरलै

पाँच बरिस के जैथैं आरो बचलो सुख टा गेलै
मिली-जुली दुख गेना कें छै गेंद बनाय कें खेलै
माय-बाबू रों मरथैं गोतियां चरकठिया लै लेलकै
जनम-जनम लें वनवासी रामे रँ ओकरा कैलकै
दाना-दाना लेली बिलठै, हट्टो-हट्टो हूवै
अन्तर जेना-जेना धधकै, बाहर आँखो चूवै
कोय दुआरी पर नै आबै दै—अछूत जानी कें
जरो छुवैला पर लागै दू हाथ बड़ा हानी कें
बहुत विधाता निष्ठुर होय छै—जल्लादे रँ क्रूर
जे निर्दोष, करै छै ओकरै थोकची-थोकची चूर
एक साथ टूअर पर विधि रों विपदा-भूख-पियास
बड़ा कठिन छै सबटा लिखना गेना रों इतिहास
हरदम लागै छै ओकरा बस आबें हेने जेना
कंठों में लसकी गेलों छै प्राण; गुजरतै गेना
कभी-कभी खुट्टा के बकरी जोरलों बाघ दिखाबै
खनै-खनै लागै छै ओकरा 'बाबू-मांय' बुलाबै
कपसै छै भीती सें सट्टी, कोन्टा में छै कानै
जिनगी के नद्दी सें दुक्खे-दुख रों बोचों छानै
छुटलै साथ स्नेहों के तें साथी-संग भी छुटलै
एक 'दुलारी' छेलै ऊ भी केकरो सें जाय जुटलै
दुख रों एक अकेल्लों साथी वहू आँख सें दूर
पर्वत सें पत्थर पर गिरलों मन छै चकनाचूर
टुक-टुक ताकै दिन-दिन भर छै, रात-रात भर हेरै
यै पर डोरी मिरतूं-जिनगीं फेरा-फेरी फेरै
साल-साल भर देतें रहलै सोच-फिकिर के हूल
जिनगी सालै गेना कें जेहनों कुन्ती रों भूल
साल-साल भर दुख सें होलै ओकरों आँखमिचौनी
साल-साल भर देह-दंश नें कैलकै ओकरों दौनी
आँख भी दुक्खै, कमर भी दुक्खै, गोड़-हाथ सब दुक्खै
लोर आँख सें जत्तें टघरै, ओतनै ठोर छै सुक्खै

बैठलोॅ-बैठलोॅ देहरी पर घन्टा-घन्टा भर सोचै
चिन्ता सेॅ अँगुरी देहोॅ मेॅ गालोॅ मेॅ छै कोचै
सोचै छै, ‘‘जिनगी रोॅ बाकी समय केना केॅ कटतै
की कादोॅ-कीचड़ के हरलै पर हमरो दुख हटतै
‘‘कर्मे के की दोष सही मेॅ ? की समाज के खेला
की कूड़े-कर्कट मेॅ छिपलोॅ हमरोॅ भाग अधेला
‘‘जों हेने छै, तेॅ दुख की छै ।’’ गेना मन मेॅ सोचै
आपनोॅ तीस बरस रोॅ वय केॅ गाली दै-दै कोसै
की जानै छै जिनगी मेॅ गेना—की छेकै सुक्ख
तीस बरस रोॅ ऊ जों छै, तेॅ साठ बरस रोॅ दुक्ख
बाहर-भीतर सेॅ चललोॅ छै यै पर ऐतनैं चक्र
छेलै नै, पर बनी गेलोॅ छै छिनमान अष्टावक्र ।

ग्रीष्म खण्ड

आपनोॅ नाटोॅ कद रोॅ देहोॅ के डगमग रँ चाल
चल्लोॅ जाय छै गेना मन मेँ लेलेॅ बहुत मलाल
बहुत पुरानोॅ धोती बान्हलेॅ, कसलोॅ जेना लँगोट
गेना के जिनगी छै; जेना , सर पर लागलोॅ चोट
करलेॅ ऐलोॅ छै गन्दा चीजोॅ सेँ यैं तकरार
बौंसी के गेना लागै छै; वामन के अवतार
लिबिर-लिबिर आँख, गोल चेहरा, अनगढ़लोॅ रँ देह
देहोॅ सेँ अर्जुन बनलोॅ छै; मन सेँ वही विदेह
आगू नाथ नै पीछू पगहा, केकरोॅ होतै मोह
बिनडोबोॅ रँ भटकै छै, दुनियाँ ओकरोॅ लेॅ खोह
भले जेठ के बरसेॅ आगिन, पूस-माघ रोॅ जाड़
मंद्राचल रँ सबसेँ झगड़ै छै गेना रोॅ हाड़
विष्णु केरोॅ वरन । भाग विष्णु के कहाँ छै एकरोॅ
गूहोॅ-मूतोॅ केॅ घीकी रहलोॅ छै केकरोॅ-केकरोॅ
लरपच सौंसे देह, टघै छै, पर चल्ले ही जाय छै
बौंसी भले सुहाबेॅ हरदम; कखनू कहाँ सुहाय छै
लेलेॅ छै दाँया हाथोॅ मेँ बोढ़नी केॅ, छोटोॅ टा
जिना उखाड़ी लेलेॅ रेँहै मैले के झोंटोॅ टा
खोजी रहलोॅ छै, कन्नेॅ पड़लोॅ छै कूड़ा-कर्कट
साफ अभी होय केॅ रहतै—नाली-हटिया रोॅ पर्पट

''दू दिन के गूहों-मूतों के सब्भे ठियाँ टघार
भगमानो ँ के भूमि के सुलगै छै हेन्हैं कपार
''के नै जानै छै बौंसी भगमाने ँ रो ँ घर छेकै
या आपनो ँ आँखी से ँ नै भगमान मसूदन देखै''
''केकरा है मालूम नै छै कि सागर जबे ँ मथैलै
मनराचल के मथनी से ँ लक्ष्मी तक निकली ऐलै''
''सौ-सौ रतन, चनरमा, अमरित, मंदराचल के कारण
जेकरा बौंसी हिरदय पर करलों छै सौंसें धारण
''देखथैं लगै, समुन्दर मे ँ ज्यों उठलों रेंहें ढेहों
या धरती पर एक्के ठियाँ उतरलों रेंहें मेहों
''के नै जानै छै है कि भगमानो ँ के कानों से ँ
जे होलै, मारै ले ँ दौड़लै हुनकै ही जानों से ँ
''सौ बरसो ँ तक चलथैं रहलै युद्ध बड़ा ही भारी
राकस के ँ आखिर मे ँ देलकै भगमाने ँ ने ँ मारी
''पंडा जी बोलै छै—तेंबें यही पहाड़ उठैलकै
आरो ओकरो ँ माथो ँ पर भगमानें ँ राखी देलकै
''लेकिन यहू समैलो ँ छेलै मन मे ँ एक ठो डोंर
बाहर निकली युद्ध करें नै लागें ओकरों धोंर
''यै लेली पर्वत पर अपनो ँ गोड़ धरी कें ऊपर
बैठी रहलै । राकस अभियो भी दबलों छै भू पर
''अभियो भी पर्वत पर बैठलो ँ होलो ँ छै भगवान
जे जोगी छै, देखै छै । सबके ँ होतै की ज्ञान'
''जे नगरी मे ँ इन्दर जी रों कष्ट दूर भै गेलै
जे नगरी मे ँ सीता के संग राम ठहरलो ँ छेलै
''ऊ नगरी के दुरगत देखों, मैला हिन्नें-हुन्नें
गोड़ बचैतें निकलों तोहों, जाय लें चाहों जन्नें
''आबे ँ नगरी के लागों के लीला अपरम्पार
देहरी से ँ सड़कों तक टघरै छै मूतों के धार
''जे धरती रामों के गोड़ों से ँ कंचन भेलों छै
जे, सीता पाबी के ँ, आँखी रो ँ अंजन भेलो ँ छै

''रिखी-मुनी रों धरती, एकरा जेकरो ँ बड़ा गुमान
ऊ बौंसी के भाँसों-औकतों से ँ छलनी छै प्रान
''कोय नै सोचै छै एकरो ँ लें जरियो कभी नै कचोट
एक एकल्ले गेना ही भोगै लें एकरों चोट
''जब तक गेना जिन्दा छै बौंसी के ँ खूब घिनाबो ँ
सोना रँ बौंसी कें गोबर-गू रों ढेर बनाबों
''बौंसी रों सम्मान-मान लें के सोचै छै आबें
के बैठलों छै सुनबै लें ? कोय, केकरा जाय सुनाबें
''हमरो ँ कहला से ँ कौनो तें मानतै हमरो ँ बात
देहो ँ के संग दैवें ने ँ देले ँ छै छोटो ँ जात
''छोटों जात, बुझै छै जेकरा बड़ों-बड्डुक्का लोग
भरी जुआनी मे ँ जेना कि होलों भारी रोग
''हमरा की लेना छै ई से ँ, जौनें जना बोहाबौ
कोय कूड़ा से ँ ठेंसी उल्टौ; कोय देखी मुस्काबौ
''आपनो ँ-आपनो ँ धरम निभाबौ, आपनों धरम निभाय छी
पूर्व जनम रों कर्मो के फल लिखलो ँ जे छै, पाय छी
''हमरा की ? हम्में तें हेने कूड़ा-कर्कट ढोतें
या ई मिट्टी के किस्मत देखी कें रोतें-रोतें'
''कोय दिन एकरो ँ धुरधा मे ँ धुरधाहै बनी समैबों
या ई मिट्टी पर तन तेजी सरँगो ँ के सुख पैबों
''जे मिट्टी पर कामधेनू रों किरपा राज करै छै
एकरों कुंडो, पापहरणी मे ँ पुन्ने-पुन्न फरै छै
''महाकाल भैरव रों जे धरती बनलों छै आसन
जेकरो ँ सम्मुख हाथ जोड़ी के ँ खाड़ो ँ छै इनरासन
''पर्वत के खोहों मे ँ शोभै छै नरसिंह भगवान
जहाँ पहुँचतें हाथ लगै छै मुक्ति के वरदान
''लखदीपा के भद्रासन, पर्वत के ऊपर खोह
जोगी शिव रो ँ तपोभूमि, जे व्यास मुनि रों मोह
''जे धरती पर वासुपूज्य के ँ मिललो ँ छै निरवान
जहाँ बिराजै छै मधुसूदन साक्छात भगवान

''ऊ मिट्टी मेँ जखनी हमरोँ पापी प्राण समैतै
ठोकर दै देबै तखनी जों सरँगोँ लै लेँ ऐतै'
''एक्के किंछा हमरोँ जिनगी मेँ छै, जे नै पुरलै,
मरलौ पर देखौं हम्मेँ कि आबेँ ऊ दिन घुरलै
''हवा उड़ाय केँ हमरा हिन्नेँ-हुन्नेँ जाय छिरयैतै
सौंसे बौंसी मेँ हमरोँ छोटोँ टा देह समैतै'
''धूल बनी केँ हम्मेँ ई धरती पर लोटी रहलौं
खुब्बे सुक्खोँ के जिनगी मौजोँ सेँ काटी रहलौं
ई सोची केँ गेना रोँ मूँ हेनोँ झलकी ऐलै
चेहरा सेँ गुस्सा-दुक्खो रोँ सबटा भाव बिलैलै
एक बार सिहरी उठलै ऊपर सेँ नीचेँ गेना
देहोँ मेँ गुदगुदी अचोके कोय लगाबै जेना
ठोरोँ पर नाँचेँ लागलै कठपुतली रँ मुस्कान
बौंसी मेँ जनमै के ओकरोँ बढ़ले गेलै गुमान
मन-मन सोचेँ लागलै 'जे भी हुएँ, मतुर नै होतै
हमरोँ रहतें कूड़ा के ढेरी पर बौंसी सोतै
''गुलगुलैन रँ लागेँ जेकरोँ मातृभूमि, ऊ नर की
भूतोँ के डेरा जे बनलोँ छै, ऊ घर भी घर की
''आग लगौ हेनोँ जिनगी केँ, जेकरोँ मिट्टी-देश
वन-वन नाचेँ सबरोँ बीचोँ मेँ, धामिन रोँ भेष''
सोची केँ ई गेना बोढ़नी हानी चलाबेँ लगलै
जानेँ ऊ देहोँ मेँ एतना जोर कहाँ सेँ जगलै
गेना आपनोँ हाथोँ सेँ जन्नेँ भी जोर लगाय छै
औकतेँ-भाँसोँ बिन्डोबोँ रँ ऊपर उठलोँ जाय छै
दाँया-बाँया हाथ चलै छै ओकरोँ एत्तेँ रन-रन
जेनाकि लट्टू धरती पर घूमतेँ रहेँ हन-हन
घामेँ लागलेँ देह, पसीना सेँ लथपथ छै गेना
सरगद होय रहलोँ छेलै; बरसा सेँ भींगी जेना
छर-छर चूएँ लागलै ओकरोँ सौंसे देह सेँ घाम
एत्हौ पर, हाथोँ पर ओकरा आय छै कहाँ लगाम

लागै छै आयकोॅ बादोॅ सेॅ कूड़ा-कर्कट, कादोॅ
कहीं दिखैतै नेॅ बौंसी मेॅ, अइये दिखै छै आधोॅ
बोढ़लोॅ धरती, घामोॅ सेॅ भिंजलोॅ लागै छै हेनोॅ
पूजा वास्तें नीपलोॅ-पोतलोॅ ऐंगने रेंहेॅ जेन्होॅ
होड़ चली रहलोॅ छै गेना आरो तमतम लू मेॅ
के जानेॅ कि जीत केकरोॅ आय होतै ई दू मेॅ
धूप छेकै या खौल्लोॅ पानी या नरभक्षी बाघिन
या ऊपरोॅ सें बरसै छै टोकरी के टोकरी आगिन
हों-हों गरम हवा सेॅ हू-हू होय रहलोॅ छै शोर
पीठ जरी रहलोॅ छै गेना रोॅ सूखै छै ठोर
बढ़ले जाय छै रौद, सुरुज माथोॅ पर चढ़लोॅ आबै
भाँती मेॅ तपलोॅ लोहोॅ के गेन्दे रँ दिखलाबै
चौंधियाबै छै आँख, मुँदी ई जाय छै अपने आप
धूप छेकै या बुतरू के गालोॅ पर कसलोॅ थाप
एक्को ठो लोगोॅ रोॅ कन्हौं दरस दिखाबै छै की
गल्ली-कुच्ची, बहियारी मेॅ आबै-जाबै छै की
बिन मनुक्ख रोॅ बौंसी तेॅ श्मशान दिखाबै छै
गेना छेकै ? या शिव जी ही धुनी रमाबै छै
सब नुकलोॅ छै घर मेॅ; जेना, पुलिस-डरोॅ सेॅ चोर
बाहर नादिर नाँखी रौंदेॅ जुलुम करै घनघोर
एक बार तड़पी उठलै रौदी सेॅ हेने गेना
छोंड़ धिपाय केॅ दागी देलेॅ रेंहेॅ ओकरा जेना
लेकिन फेरू कामोॅ मेॅ तन-मन सेॅ लागी गेलै
आग सुरुज के ओतनै ओकरौ मेॅ भी जागी गेलै
हाथ चलेॅ लगलै दायाँ-बायाँ मेॅ ओकरोॅ रन-रन
जेना कि लट्टू धरती पर घूमतेॅ रहेॅ हन-हन
आगिन पर चढ़लोॅ खपड़ी रँ धरती तपतेॅ रहलै
गोड़ गेना के जेकरा पर लाबा रँ फुटतेॅ रहलै
ई देखै लेॅ बाहर छै ताड़ोॅ पर खाली गिद्ध
एकदम इस्थिर आँख, जरा मुँदलोॅ, औघड़ रँ सिद्ध

बीच-बीच मेँ गरमी सेँ चिकरी उठ्ठै छै हेनोँ
पूत मरै पर बेहोसी मेँ माय चिहाबै जेहनोँ
ई तपासलोँ दिन मेँ अनचोके ही जैतै जान
ठारी पर बैठलोँ कौआ के हक-हक करतेँ प्राण
तहियो बोढ़नी पर नाँचै गेना रोँ अँगुरी गिन-गिन
ऊपर सेँ बरसी रहलोँ छै टोकरी-टोकरी आगिन
आखिर थक्की केँ सुरुजो पच्छिम मेँ डूबी गेलै
रँग सुनहला किरनोँ के गेना रोँ मूँ पर खेलै ।

वर्षा खण्ड

पानी सेँ ढलमल मेघोँ के सरँगोँ मेँ बारात
सूरज देव बिलैलै हेनोँ दिन्हो लगै छै रात
मेघ छिकै या कारोँ-कारोँ राकस करै छै खेल
बिजुरी नेँ ई, दाँत छिकै राकस के । मिलै छै मेल
करिया मेघोँ रोँ बीचोँ मेँ बिजुरी लागै केहनोँ
कोय सिलोटी पर टेढ़ोँ रेखा खिचलेँ छै जेहनोँ
कभी झाकसोँ, कभी तेँ बूंदा-बूंदी के अठखेल
देखलेँ छेलियै हेनोँ नै धरती-सरंगोँ के मेल
बिजुरी केरोँ मशाल जलैनें, ठनका-तुरही साथ
बूंदा-बूंदी-झाकसोँ-अन्धड़-पानी के बारात
आय सरँग शिव हेनोँ लागै—जटा बिखरलोँ छै
फूले लाबा, आय धरती रोँ खोचा भरलोँ छै
बाप बनी केँ सरँग करै छै पहलोँ कन्यादान
नेहोँ के लोरोँ सेँ बेटी रोँ भींजे छै प्राण
हू-हू हवा चलै छै केहनोँ गाछ डोलैनेँ-झाड़नेँ
ओकरो जोँड़ उखाड़नेँ जौनें भीतर छेलै गाड़नेँ
पछिया के झोंकोँ सेँ लम्बा गाछ हिलै छै हेनोँ
निसां चढ़ैनेँ आरी-बारी लोग झुमै छै जेहनोँ
भाव उतरला पर जेना कि भगत चलै छै चाल
लम्बा गाछोँ के होय रहलोँ छै होने कुछ हाल

पछुवा हूकै, पुरबा हूकै, गाछी केरोॅ निनौन
आपनोॅ रीस उतारी रहलोॅ छै जेना कि सौन
कत्तेॅ देर बरसलै तभिये रुकलै जाय केॅ मेघ
पर धरती पर पानी के की कहीं मिलै छै थेग
सर-सर, छप-छप, होॅ-होॅ पानी के बहलोॅ छै धार
उभचुभ करै छै छोटका गाछ; तेॅ डुबलोॅ खेत-पतार
ठारी बीच नुकैलोॅ-भींजलोॅ झाड़ै डैना काक
फुदकी-फुदकी दीएँ लागलै काँव-काँव के डाक
की बोलै छै ? मेघ थमै के सबकेॅ कहै सनेश
आकि वियोगिन केॅ सुख दै छै, जेकरोॅ पिया विदेश
पाँख खुजाबै छै लोली सेँ ठहरी-ठहरी केॅ
पानी कभी उड़ाय छै ऊपर पंख पसारी केॅ
पत्ता पर पत्ता सेँ टप-टप बूंद चुवी रहलोॅ छै
रुकी-रुकी केॅ उतरै लेॅ जों कोय सिखी रहलोॅ छै
गाछ लगै छै, मली-मली केॅ जना नहैलेॅ हूवेॅ
बूंद; जना, पत्ता रोॅ लट्टोॅ सेँ ससरी केॅ चूवेॅ
बरसा थमी गेलोॅ छै लेकिन ठनका तेॅ ठनकै छै
बाहर जाय सेँ मोॅन डरै छै, दोनों गोड़ रुकै छै
गेना नेँ ओसरा पर सेँ ऐंगन के ओर देखलकै
आँख भरी ऐलै ओकरोॅ; हाथोॅ सेँ लोर पोछलकै
पोखर बनी गेलो छै ऐंगन, देहरी भँसी गेलोॅ छै
परछत्ती नीचेॅ छै टुटलोॅ, भीतो धँसी गेलोॅ छै
खोॅर बची रहलोॅ छेलै छपरी पर कहीं-कहीं पर
चूला सेँ पानी के फोका होय छै वहीं-वहीं पर
ऐंगना दोनों ओर देहरी लागै नदी रोॅ पाटोॅ
गेना तड़पी उठलै, खाय केॅ कोय जना कि साटोॅ
लोर चुवी केॅ गालोॅ तक आबी केॅ ठहरी गेलै
मिरतू सेँ झगड़ै मेँ जिनगी फेरू हारी गेलै
बाहर बरसा थमी गेलोॅ छै, ठनको रुकी गेलोॅ छै
माथो तेज हवा रोॅ धीरेॅ-धीरेॅ झुकी गेलोॅ छै

लेकिन गेना रोॅ आँखी सेँ झोॅड़ पड़ी रहलोॅ छै
हिरदय मेँ दुक्खोॅ रोॅ झोंका तेज बही रहलोॅ छै
हुमड़ै छै फटलोॅ छाती—देखी कें भीत भसकलोॅ
बचलोॅ पुरबारी छपरी सेँ भी कुछ खोॅर खसकलोॅ
पट-पट कें रेॅ लगलै कानै लेॅ दोनों ठो ठोर
टप-टप चूवेॅ लगलै आँखी सेँ गेना रोॅ लोर
आँख मुनी कें बैठी गेलै माथोॅ पर लै हाथ
गेना कें समझै मेँ नै आबै छै विधि रोॅ बात
‘‘जे गरीब छै ओकरै पर कैहिनें ई जुलुम हुवै छै
जेकरोॅ आँख चुवै छै, ओकरे छपरी केना चुवै छै
‘‘की बिगाड़लेॅ छै भगवानोॅ के गरीब नेँ हाय
रहै आपनोॅ जिनगी खाय कें, जिनगी एकरा खाय
‘‘केकरा कहै छै सुक्खोॅ रोॅ दिन, की चैनोॅ रोॅ रात
हम्में तेॅ एक्के जानै छी बस दुक्खोॅ रोॅ बात
‘‘दुक्खे साथी, दुक्खे बाबू, दुक्खे हमरोॅ माय
दुक्खे आगू-पीछू डोलै, दुक्खे एक सहाय
‘‘जानेॅ कहिया देखबोॅ आँखी सेँ सुक्खोॅ रोॅ दिन
जिनगी हेने लागै, जे रँ गड़ी गेलोॅ छै पिन
‘‘रात कटै छै परलय नाँखी, दिन भी जना कभात
एकदम गूरे नाँखी टहकै छै गरीब रोॅ जात’’
‘‘छटपट-छटपट कें रेॅ हेनोॅ सुतला मेँ, जगला पर
जिन्दा झोंकी देलेॅ रेॅहेॅ कोय जरलोॅ सारा पर
‘‘लोग कहै छै जेकरोॅ कोय नै, ओकरोॅ छै भगवान
कहाँ नुकैलोॅ छै इखनी, कैहिनें नी दै छै ध्यान
‘‘पंडा जी तेॅ बोलै छेलै—इन्दर जे गुस्सैलै
सौंसे वृन्दावन मेँ पानी सागर जकां समैलै
‘‘अलबल कें रेॅ लागलै बच्चा, बूढ़ोॅ, जोॅर-जनानी
गोबरधन लै लेलकै अँगुरी पर रोकै लेॅ पानी
‘‘इखनी कैहिनें नी आबै; हम्मू तेॅ संकट मेँ छी
की भगतान बड़ोॅ कें ही चाहै छै बीछी-बीछी

''जों भगमान बड़ोॅ लेॅ छै तेॅ के गरीब रोॅ होतै
के पहाड़ रँ जिनगी केॅ ढोबै मेँ साथ निभैतै'
''कोय पूछै तेॅ कना सुनैबै—मन रोॅ विथा अपार
जिनगी एक गरीबोॅ लेली साहू केरोॅ उधार''
चिंता मेँ बरफोॅ रँ गेना केॅ मन गल्लोॅ जाय छै
हुन्नेॅ मेघोॅ के झुमार सरँगोॅ सेँ टल्लोॅ जाय छै
सूरज सेँ निकली-निकली केॅ बिखरै आबेॅ धूप
या सोना केॅ परसी रहलोॅ छै कोय लैकेॅ सूप
चमकी उठलै एक्के बारगी जे-जे जहाँ-जहाँ पर
आँख बेचारी देखै लेॅ रुकती तेॅ कहाँ-कहाँ पर
पानी पर धूपोॅ के पतला-पतला किरिन छै पड़लोॅ
की साड़ी पर सोना रोॅ ही तार सुनहरोॅ जड़लोॅ
पानी मेँ ढुकलोॅ बगुला दूरोॅ सेँ बहुत सुहाबै
उपलैलोॅ छै शंख नीचु सेँ सबकेॅ हेने बुझावै
रेशमी साड़ी रँ चिकनोॅ, देहोॅ सेँ हवा लगै छै
कोय पनिहारिन हौले सेँ टकराबेॅ, होने ठगै छै
गुदगुदाय दैँ सौंसे देह केॅ देह सेँ लगी लगी केॅ
लजवन्ती कनियैनी पहिलेॅ-पहिलेॅ जेना छुवी केॅ
उवड़ोॅ-खाबड़ोॅ बांधी सेँ पानी आबै छै चल्लोॅ
जों बनिहारिन रोॅ बच्चा खेतोॅ के बीच उछल्लोॅ
गूंजै छै पानी के सर-सर दूर-दूर ताँय हेनोॅ
दूर गाँव मेँ गीतारिन रोॅ गीत, बीहा मेँ जेहनोॅ
ढीबा, सुगिया, मंटू रोॅ बुतरू पानी मेँ उछलै
मैदानोॅ रोॅ पानी मेँ जानी-जानी केॅ फिसलै
गुदगुदाय वाला पुरबा रोॅ लगथैं कोमल हाथ
निकली ऐलै बूढ़ो सब बाहर बुतरू के साथ
हिन्नेॅ गेना ऐंगना-पानी केॅ हाथोॅ सेँ उपछै
भीत भसकला के कारण नाली के माटी खपछै
तरबर होय रैल्होॅ छै गेना रोॅ सौंसे देह-हाथ
उपछै मेँ भींजलोॅ छै या घामोॅ मेँ? अनबुझ बात

झुकलोॅ धौंनोॅ, कमर ऐंठतेॅ, सब देहोॅ रोॅ जोड़
कत्तेॅ देतियै साथ ? गेना रोॅ दुक्खेॅ लागलै गोड़
थकथकाय केॅ बैठी रहलै होय केॅ वैठाँ चूर
'बालम बिन बरखा नै भावै' कोय गाबै छै दूर ।

शरत-खण्ड

आसिन के माह बीती गेलै ऐलै आबेॅ कातिक
कैतकारोॅ हवा सौसें देह गुदगुदाबै छै
जेना छुवी देल रहेॅ मोरोॅ केरोॅ पखना सेँ
छिनमान होने हवा देहोॅ केॅ बुझाबै छै
रूई नाँखी उड़ै लेॅ चाहै छै मोॅन रहि-रहि
देहो केॅ बँधी केॅ रहबोॅ आय नै सुहाबै छै
फूल हेनोॅ दिनोॅ मेँ पराग नाँखी सौंसे रात
मनोॅ के बौराबेॅ लागेॅ—कातिक कहाबै छै ।

धोलोॅ-धोलोॅ रात लागै, दिन भी नहैलोॅ हेनोॅ
साफ-साफ सरँगो भी कांचे रँ सुहाबै छै
गरदा के नाम नै कहीं पे जरियो टा भी छै
चुनी-चुनी बीछी लेलेॅ रेॅहेॅ हेने लागै छै
रेशमी पटोरी रँ माँटी, मोॅन होने मोहै
मनोॅ सेँ विराग-जप-जोग केॅ भगावै छै
धोबी सेँ धुलैलोॅ दगदग धोती हेनोॅ दिन
जोगियो रोॅ निरमल मनोॅ केॅ लजाबै छै ।

डाँड़े-डाँड़ गेना आबी रहलोॅ उदास खिन्न
टग्घै-झुक्कै, रुक्कै फेरू खुद केॅ सम्हारै लेॅ

साँझो॑ के संझबाती जरी चुकलो॑ छै घरे॑-घरे॑
पंडौ भी जुगाड़ो॑ मे॑ छै आरती उतारै ले॑
मनबिच्छा पाबै ले॑ मसूदन के द्वारी पर
ठाढ़ी छै जनानी-छौड़ी अँचरा पसारै ले॑
झटकलो॑-झटकलो॑ गेनौ आबी रहलो॑ छै
बाबा के॑ कहै ले॑ कुछ, बाबा के॑ पुकारै ले॑ ।

जोरो॑ से॑, हौले से॑ बाजै-टुनटुनी मन्दिरो॑ मे॑ छै
घंटा नाद से॑ मनार घन-घन करै छै
बाबा रो॑ पुजारी आरो भक्त रो॑ झुमै छै मो॑न
नाद सुनी पापी रो॑ करेजो॑ केन्हो॑ डरै छै
बंशी जेना कृष्ण रो॑ गोपी रो॑ मो॑न हरै छेलै
भागवत-भजन होन्है के॑ मो॑न हरै छै
ठ्ट्ठ भीड़ लागलो॑ छै देवो॑ रो॑ दुआरी पर
जहाँ सुख बरसै छै, जहाँ पुन्य फरै छै ।

पूर्णिमा रो॑ रात छै, आकासो॑ मे॑ दूधिया चान्द
चाँदी रो॑ जलैलो॑ दीया–हेने ही दिखाबै छै
जेना बोहो॑ मे॑ भाँसै छै कागज रो॑ नाव आरो
बच्चा सीनी देखी-देखी हाँसै, नाचै, गाबै छै
ओन्हे बोहो॑ चाँदनी रो॑ बहै छै धरती पर
भाँसै छै मंदार देखी चाँद मुस्काबै छै
ठहाका इन्जोरिया के डरो॑ से॑ अन्हार आय
आपना के॑ धो॑र, लत्ती तो॑र मे॑ नुकाबै छै ।

धानो॑ से॑ जरी टा उच्चो॑ गेना, धानो॑ के॑ हटैनें
आबी गेलै मन्दिरो॑ के एकदम सामना
झपटी-झपटी चलै मे॑ ऊ हाँफी रहलो॑ छै
रुकै छै केन्हौं के॑ नै शरीरो॑ केरो॑ घामना

पोछी कें हाथों सें घाम, साँसों कें जोरों सें खींची
छोड़ी देलकै गेना नें बहुत आबी सामना
मतुर दुआरी पर गोड़ धरतें ही हाय
रही गेलै मने मेँ मनों रों मनोकामना ।

''केना जाँव भीतर मेँ बाबा रों सूरत देखौं
लोगों लें हम्मेँ तें होने, जेनाकि बच्चा लें भूत
हम्मेँ नै बडों बड़ोक्का, बड़ों कुलों रों चिराग
आकि धरमों के मालिक, टाका वाला केरों पूत
हम्में ऊ जाति रों छेकौं जेकरा कि काम एक
सब्भे रों गू साफ करौं आरो साफ करौं मूत
जेना आँख ऐला पर रोशनी आँखी कें गड़ै
सब्भे लोगों के बीचों मेँ होनै कें हम्में अछूत ।

''ऊ दिनाँ पुरोहितो तें बोलै छेलै यही नी कि
'भगवान घट-घट मेँ निवास करै छै
एक्के ब्रह्म धरलें छै यहाँ मेँ अनेक रूप
सब्भे मेँ बराबरे वही विलास करै छै
जबकि एक्के ही देव जीव दै छै, पालै-पोसै
आरो एक्के देव सब कें विनाश करै छै'
तबें केना भेद भेलै आदमी-आदमी मेँ ही
एक-दूसरा के कहिनें उपहास करै छै ।

''कभी-कभी तें लागै छै हमरा यही कि प्रभु
ठिक्के कैहलों छौ तोहें गीता मेँ हँकारी कें
तारा मेँ चन्द्रमा छेकौ, देवता मेँ इन्द्रदेव
पर्वतों मेँ मेरू रूप आबौ तोहें धारी कें
सागरे जलाशय मेँ छौ, हाथी मेँ एरावत ही
कामधेनु गाय मेँ छों–लघुता कें बारी कें

पशु मेँ होनै केँ सिंह, ऋतु मेँ वसन्त छेका
तबेँ छोटोँ रोँ के होतै ? सोचलौ विचारी केँ ।

"यहेँ तेँ सुनै छियै कि पापी सेँ पापी केँ तोहें
तारी देलौ ! तरलै जरा-सा नाम लेथैं नी
बालमीकि तरलै तेँ तरलै अजामिल भी
तरी गेलै गोड़ोँ सेँ अहिल्या भी छुवैथैं नी
पातकी-पतित कत्तेँ पापोँ सेँ विमुक्त भेलै
याद तोरोँ एक बार हिरदै मेँ ऐथैं नी
यही सब सुनी आबी गेलोँ छियौं द्वारी पर
कहै छौं—हाथी के सुनलौ सूँढ़ के उठैथैं नी ।

"हम्में नै चाहै छी प्रभु उच्चोँ घोँर, उच्चोँ जात
मोक्ष भी हम्में नै चाहौं, हम्मेँ यही चाहै छी
काटी लियौं जाड़ा केन्हौं ऐतनै करी देँ तोहें
आरो तेँ केन्हौं केँ सब्भे जेना होय छै साहै छी
लागै छै यही कि प्रभु काटेँ पारबोँ नै जाड़ा
जबेँ-जबेँ आपनोँ ही सामरथ थाहै छी
आरो की कहौं तोरा सेँ, सब्भे बात जानथैं छोँ
होनै निभी जाय आबेँ जेनाकि निबाहै छी ।"

एतना कही केँ गेना मने-मन लौटी ऐलै
आरो चढ़ी गेलै फेरू खेतोँ केरोँ आरी पर
गाढ़ोँ दूध नाँखी वहेँ चाँदनी, उफनैलोँ रँ
बहै छै छप्पर पर, छोँत आरी-बारी पर
मेटकी चानोँ रोँ जेना फटी गेलोँ रहेँ आरो
दूध बही गेलोँ रहेँ सुखदा-कछारी पर
लूटै छै चाँदनी परी छत्तोँ पर चढ़ी-चढ़ी
रधवा रोँ रधियो भी आपनोँ खमारी पर ।

टकटकी लगाय कें गेना चाँद कें निरासें लागलै
माथा पें पिठाली सें ही टिकुली बनैलों चाँद
सरंगों रों कल्पद्रुम आँखी रों आगू में रहें
आरो जेकरा में लागै फूले रँ फुलैलों चाँद
नीला-नीला सरँगों के सागर मथैला सें ही
भीतर सें अनचोकै बाहर ज्यों ऐलों चाँद
नीचें छुपी गेलों छै की बाँही सें छुटी कें प्रिया
ऊपर सें झाँकी-झाँकी देखै छै बिहैलों चाँद

कत्तें गोरों-गोरों बनी रहलों छै बौंसी-देह
लागै छै कि मली-मली दूधों सें नहैलें रहें
झुक्कों-झुक्कों फूल नै ई खिललों छै; हेने लागै
आपने सें गूँथी-गूँथी खोपा में सजैलें रहें
चललों छै पूजै लें ही मनकामना मन्दिर
मनों में पुरै के कोय कामना मनैलें रहें
मंदारों के ऊपर में चमकै छै चाँद हेने
हाथों में पूजा के थाली जेना कि उठैलें रहें ।

देखी-देखी आचरज गेना कें हुऐ छै घोर
चाँद छेकै या कंतरी दही रों जमैलों छै
आकि उतपाती कोनो बच्चा नें गुलैलों सें ही
आकासों में बड़ों-बड़ों छेद करी देलों छै
नै-नै ई शकुन्तला रों वने केरों खरगोश
भूलों सें मैदानों में जे हिन्नें चली ऐलों छै
रही-रही गेना-हाथ पकड़ै लें उठी जाय
चिन्तै की जे लोगें कहै—गेना उमतैलों छै ।

जेनाकि करै छै कोय देखी कें अजूबा चीज
होन्है ही कराय आय चान छै बेचारा कें

चान की ? लागै छै जेना नीलम-परातोँ मेँ ही
कल्हेँ-कल्हेँ घुड़कैतेँ रहेँ कोय पारा केँ
आकि खाली मूड़ी देवदूत रोँ दिखाय पड़ै
तैरै मेँ पानी रोँ बीच—पाबै लेँ किनारा केँ
देखी-देखी गेना छै बौरैलोँ जेना ओकरा केँ
घोरी केँ पिलैलेँ रहेँ भाँग मेँ धतूरा केँ ।

शिशिर खण्ड

पूस करी कें पार निगोड़ा आबी गेलै माघ
सब ढुकलो ॅ छै घर मे ॅ; जेना, ओसरै रहें ॅ बाघ
हूकै छै की रॅ नी हो ॅ-हो ॅ ठंडा बहै बयार
दलकै छै बोरसो के आगिन आरो खड़ा मनार
केन्हो ॅ कुहासो ॅ बिछलो ॅ छै—पर्वत से ॅ लै के ॅ खेत
की कम्बल ओढ़ी सुतलो ॅ छै पर्वत-भूमि अचेत
उजरों-उजरो ॅ छिकै कुहासो ॅ खाली हेन्हैं कहाय लें
आग लगैनें छै देहो ॅ से ॅ धरतीं जान बचाय ल
हेनो ॅ हानी के ॅ मारले ॅ छै नी पछुवा ने ॅ लात
ठिठुरी के ॅ अकड़ी गेलो ॅ छै गाछ, गाछ रो ॅ पात
सुन्नो ॅ-सुन्नो ॅ लागै छै केहनो ॅ नी खेत-बैहार
गल्ली-कुच्ची-चौबटिया सब मरघट रो ॅ संसार
हेन्हे कन-कन हवा चलै छै, छूवी लै जों देह
पलक मारथैं टूटी जाय धरती से ॅ ओकरो ॅ नेह
लोग कहै छै, ई जन्मो ॅ मे ॅ नै देखलौं है जाड़
दलकी के ॅ देहो ॅ से ॅ बाहर निकली जाय छै हाड़
एक अकेलो ॅ हवा चलै छै—उमतैलो ॅ साँढ़ो ॅ रॅ
लागै छै बौंसी, रांढ़ो ॅ के हाथ रहें ॅ नाँढ़ो ॅ रॅ
जाड़ो ॅ के भय से ॅ रौदा भी होलै अन्तरध्यान
हुलकै छै सरंगो ॅ रो ॅ पीछू से ॅ डरलो ॅ दिनमान
सोचै छै सूरज—निकली के ॅ कौनें गँमाबे ॅ जान

मेघोॅ रोॅ बिल मेॅ मूसोॅ रँ ढुकलोॅ छै भगवान
बर्फो सेॅ जादा कनकन्नोॅ पछूवा बहै छै राड़
जमलोॅ जाय छै लहु देह रोॅ, गल्लोॅ जाय छै हाड़
गेना नेॅ बोरसी के आगिन खोरनी सेॅ उसकैलकै
पझलोॅ-पझलोॅ तावोॅ मेॅ थोड़ोॅ-टा जान फुँकलकै
सर्दी के मारे तेॅ ओकरोॅ जान निकललोॅ जाय छै
लौटी आबै प्राण देह मेॅ फेरू चललोॅ जाय छै
बोरसी केॅ गोदी मेॅ लै केॅ गेना कस्सी लेलकै
माय रोॅ सुख जों सीना मेॅ बेटा केॅ कस्सी पैलकै
ज्यों लोगोॅ रोॅ नजरीं सेॅ बेटा केॅ माय छिपाबै
गेना बोरसी केॅ पछुवा रोॅ डर सेॅ होन्हैं नुकाबै
लेकिन हेनोॅ लहर हवा रोॅ उठलै; ताव पझैलै
गेना केॅ लगलै, गोदी रोॅ बच्चा जेना नसैलै
देखी केॅ पझलोॅ तावोॅ केॅ ठण्डौं करै छै जोर
किटकिट दाँतोॅ के साथे मेॅ पटपट करै छै ठोर
रक्खी केॅ बोरसी एक दिश मेॅ थरथर करतेॅ गेना
लेलकै आपनोॅ गेनरा, छिनमान ओकरे जिनगी जेना
ओढ़ी लेलकै ओकरा, सौंसे देह समेटी लेलकै
आरो ठेना के भीतरी में मूड़ी गोती लेलकै
तैय्यो दलकै छै गेना, की गेनरा ही दलकै छै
लागै छै ओढ़ना के भीतरी बच्चा ही चमकै छै
बहुत देर नै रेॅहेॅ पारलै गेनरा देलकै फेकी
गेना केॅ मुश्किल लागै छै जान बचाना अबकी
हिन्नेॅ-हुन्नेॅ देखी केॅ कानोॅ पर बीड़ी रखलोॅ
सुलगैलकै ढिबरी मेॅ, पैहलें सेॅ ही आधोॅ जरलोॅ
पीयै छै, पीवी केॅ हाथोॅ केॅ ठनकाबै लेली
मुट्ठी मेॅ मूनी केॅ रक्खै छै गरमाबै लेली
लेकिन तीन फूँक रोॅ बादे बीड़ियो गेलै ओराय
सोचै गेना, 'देह गरमाबै केरोॅ कोॅन उपाय'

रगड़ै छै गोड़ोॅ रोॅ तलवा, कभी हाथ रगड़ै छै
जान लेबय्या जाड़ा सेॅ जानोॅ लेॅ ऊ झगड़ै छै
साहस बान्ही घर सेॅ भेलै बाहर केन्हौं गेना
डरलोॅ-डरलोॅ दोषी बुतरू मास्टर लुग जाय जेना
औसरा सेॅ निकली केॅ बाहर पिछुवाड़ी तक गेलै
ई बीचोॅ मेॅ कत्तेॅ दाफी बरफ-हिमालय भेलै
तोड़ी लेलकै गाछ-बिरिछ रोॅ ठनकोॅ-टनकोॅ ठार
रखलेॅ छै झुकलोॅ कान्हा पर निसुवाड़ी रोॅ भार
झब-झब आबी बाहर रोॅ बोरसी मेॅ बोझी देलकै
फेरू ताखा रोॅ ढिबरी लानी केॅ आग नेसलकै
सुलगी उठलै देखथैं-देखथैं लहकी उठलै ठार
खन-खन पत्ता निसुवाड़ी रोॅ आग करै अम्बार
लपट उठै छै आगिन रोॅ, पछुवा सेॅ हिलै-डुलै छै
जन्नेॅ जाय छै आग, गेना रोॅ हुन्नै गला चलै छै
लागै छै झूमी-झूमी केॅ बीन बजैतेॅ रेॅहेॅ
लपटोॅ रोॅ नागिन केॅ गेना जिना नचैतेॅ रेॅहेॅ
धाव लगै छै देहोॅ सेॅ तेॅ हटकी-हटकी जाय छै
'सोझे लपट उठी केॅ नै तेॅ भटकी-भटकी जाय छै'
बैठलोॅ, उठलै; धोती रोॅ फेंटा केॅ कस्सी लेलकै
आरो लपटोॅ रोॅ ऊपर सेॅ दू-तीन कूद लगैलकै
चलतेॅ रहलै खेल हेन्हैं केॅ ताव पझैलै जेहनै
बोरसी लुग मेॅ कुकुड़याय केॅ बैठी रहलै तेहनै
रात खसी रहलोॅ छै आबेॅ, चिकरै गीदड़-सियार
गूंजै छै ओकरोॅ कानै सेॅ नद्दी, खेत, बैहार
सौनोॅ के बोहोॅ रँ होॅ-होॅ कनकन बहै बयार
घर मेॅ दलकै छै गेना; माँदी मेॅ गीदड़-सियार
जागी रहलोॅ छै दोनों इक चिकरी केॅ इक चुप छै
दोनों रोॅ बीचोॅ मेॅ खाली रात अन्हरिया घुप छै
कानै छै कुत्ता कोन्टा मेॅ—विष-विष हवा ठहार
मोॅन बटारै लेॅ गेना देवोॅ केॅ करै पुकार

दू दिन के बाद कहीं उगलै जाय धूप;

सरँगोॅ रोॅ कोठी मेॅ मुन्हन सुरूजोॅ रोॅ
खोली केॅ किरनोॅ रोॅ धान केॅ ओसाबै छै
आँगन-दुआरी पर भरी-भरी सूप

दू दिन के बाद कहीं उगलै जाय धूप ।

किलकै छै दुनियाँ ही जेना कि
चिलका कोय किलकै छै अनचोके सोरी घोॅर
साठी रोॅ चटकन सेॅ, खलखल रँ रूप

दू दिन के बाद कहीं उगलै जाय धूप ।

हाँसै छै खलखल की गेंदा रोॅ फूल !

जेना कि डेढ़िया रोॅ नीचेॅ मेॅ गुलदाउदी
धारी मेॅ सजलोॅ ठठाबै छै अनपट्टोॅ
मोहै छै; जेना, कोय बचपन रोॅ भूल

हाँसै छै खलखल की गेंदा रोॅ फूल !

रौदें जे छुलकै तेॅ की सुरुजमुक्खी भी
लाज-बीज छोड़ी केॅ देह देलकै खोली केॅ
फुटलोॅ जुआनी छै छोड़ी केॅ कूल

हाँसै छै खलखल की गेंदा रोॅ फूल !

भोरे-भोर ओसोॅ सेॅ लोॅत-पात झपलैलोॅ !

ओझरैलोॅ, शरमैलोॅ, भारी देह, अलसैलोॅ
कद्दू के लोॅत छै पसरलोॅ दीवारी पर
खोपा मेॅ रातके लगैलोॅ फूल-कुम्हलैलोॅ

भोरे-भोर ओसोॅ सेॅ लोॅत-पात झपलैलोॅ !

ढकमोरलोॅ ठारी रोॅ बीचोॅ मेॅ कत्तेॅ नी
रौदी दिश चोंच करी कचबचिया चहकै छै
माथा पर मोती लै दुबड़ी छै भरमैलोॅ

भोरे-भोर ओसोॅ सेॅ लोॅत-पात झपलैलोॅ !

भुटकुरलोॅ बुतरू सब देहरी पर बैठलोॅ छै;

बान्ही केॅ गाँती कोय उछलै छै ऐंगना मेॅ
आरो कोय सटलोॅ दीवारी सेॅ खाड़ोॅ छै
तापै लेॅ रौद जोरें बिरनी रँ टुटलोॅ छै

भुटकुरलोॅ बुतरू सब देहरी पर बैठलोॅ छै ।

रौदी सेॅ बुतरू-मूँ सोना रँ चमकै छै
की बुतरू-मूँ छूवी केॅ चमकै छै सोने ठो
ऐंगना मेॅ बैठै लेॅ टुनटुनमौ रुसलोॅ छै

भुटकुरलोॅ बुतरू सब देहरी पर बैठलोॅ छै ।

गेना भी बैठलोॅ छै ठेहुना मेॅ मूँ गोती ।

उसुम-उसुम रौद गिरी रहलोॅ छै धौना पर
फेरू ऊ धौनोॅ सेॅ पीठी तांय टघरै छै
नढ़िया देह, कमरोॅ सेॅ सटलोॅ छै बस धोती

गेना भी बैठलोॅ छै ठेहुना मेॅ मूँ गोती ।

सोचै छै मने-मन, 'बल्हौं छी बौंसी मेॅ
मरला पर फाँक भरी कपड़ौ तेॅ नै मिलतोॅ
कानवो नै करतै कोय एक झुनिया माय रोती,

गेना भी बैठलोॅ छै ठेहुना मेॅ मूँ गोती ।

सोचै छै मने-मन, ''की होतै झुनियाँ के ?

चूल केन्होॅ लगै छै बगरो रोॅ खोता रँ
इक ठोप्पोॅ तेलोॅ केॅ जानबो करै छै की
मूँ केन्होॅ लागै छै कुम्हलैलोॅ नुनियाँ के'

सोचै छै मने-मन की होतै झुनियाँ के ?

''दू दिन तेॅ होले छै' बाप मरी गेलोॅ छै
रस्ता कोय देखी नै शरणोॅ मेॅ ऐलोॅ छै
दुखियैं दुख जानै, भरोसोॅ की दुनियाँ के''

सोचै छै मने-मन की होतै झुनियाँ के ?

''दुख आबै, गुन मारै, बड़ोॅ-बड़ोॅ गुनियाँ के ।

की करेॅ पारै छी दूनू लेॅ सोचै छी
चिन्ता मेॅ देह कभी, चूल कभी नोचै छी

दुख तें लहरनी ही लागै छै लौनियाँ के

दुख आबै, गुन मारै बड़ो-बड़ो गुनियाँ के ।

दैवों के चक्र केन्हों घूमै छै हन-हन-हन
रूय्ये रँ धूनै छै सब्भे कें धुनकी सें
के जानें रीत बड़ी अजगुत छै धुनियाँ के

दुख आबै, गुन मारै बड़ो-बड़ो गुनियाँ के ।

''तहियो की लोग थकी-हारी कें बैठलों छै;

जेठों में रौद सहै, पूसों रों पल्लौ तक
अन्धड़, बतासों, बिन्डोबों सें झगड़ै में
सुखलों आमों के ही तख्तै रँ ऐंठलों छै

तहियो की लोग थकी-हारी कें बैठलों छै ।

लोगें जों चाहें तें धरती कें सरंगों पर
सरँगों कें धरती पर लानी कें रक्खी दें
लोगे नी दुनियाँ कें बदलै में जुटलों छै

तहियो की लोग थकी-हारी कें बैठलों छै ।

''हमरो ई किस्मत बदलतै नै केना कें;

लौटतै भाग । मनों से एड़िया रगड़ला पर
पानियो भी लोटै छै भुय्याँ पर मछली रँ
उल्टै छै, पल्टै छै—छलमल छल जेना कें

हमरो ई किस्मत बदलतै नै केना कें ।

असकल्ले रैथियै तें बात छेलै आरो कुछ
आबें तें दू-दू परानी छै हमरों साथ
लान्है लें लागतै सुख पकड़ी कें गेना कें

हमरो ई किस्मत बदलतै नै केना कें ।''

आँखी में शहरों के शान-शौक नाँचै छै।

देखै छै—सड़कों पर ठेला चलाबै छी
दू मोटिया ढोला पर दू टाका पाबै छी
सोची कें हिरदय रों हिरना कुलाँचै छै

आँखी में शहरों के शान-शौक नाँचै छै ।

मोटिया उठैतै जे, ठेला चलैतै जे
देखै छै धौनों कि बोझों लायक छै की नै
कुल्हों-कलैयो भी झोली कें जाँचै छै

आँखी में शहरों के शान-शौक नाँचै छै ।
सपन्है में गेना नी एत्तें अघैलों छै
भुल्लै—गरीबी में कत्तें टौव्वैलों छै
धौना पर दूधों में बरकैलों रौद गिरै
जेना मधुमक्खी रों छत्ता सें मों द गिरै
झर-झर-झर, उसुम-उसुम रौद अभी बरसै छै
गदगद मों न गेना रों; गेंदै रँ हरसै छै ।

नगर खण्ड

''रेशम रँ चिकनो॑ छै की सड़के, गलियो भी
बोलै छै बड़के नै, टाँय-टाँय निबोलियो भी
सजलो॑ चौबटिया छै —मीना बाजारे रँ
चमकै छै सौसें ठो शहर केन्हो॑ पारे रँ
छूते॑ आकासो॑ के॑ उच्चो॑ हवेली छै
साजो॑ मे॑ हेने; कोय दुल्हन नवेली छै
लोटकी की रोशनी रो॑ लटकै छै ठामे-ठाम
के छै ? लगाबें जे—की छै ई सबके दाम
लागै छै टूटी आकासे ही गिरलो॑ छै
धरती पर जेकरा से॑ तारा बिखरलो॑ छै
की जरै ! की बूतै ! छोटका सब झकझक रँ
गुजगुज अन्हरिया मे॑ भगजोगनी भकभक रँ ।

''टमटम छै, रिक्सा छै आरो छै रेलो भी
सिनमा भी, थेटर भी, जादू के खेलो भी
सरंगो॑ के परियो से॑ सुन्नर सब मौगी छै
पीछू से॑ लागलों कुछ जट्टा बिन जोगी छै ।

''की रँ लहरैलों सब चूलो॑ के॑ चल्लो॑ छै
गठले नै; जेकरों जुआनी भी ढल्लो॑ छै

देखी कें गेना कुछ ओझरैलै, शरमैलै
सोचै छै—मौगी की शहरों रों पगलैलै ।''

धारी में सजलों छै सौ-सौ दूकाने नै
साहू रों, सेठों रों उच्चो मकाने नै
ठामेठाम शीशा रों बक्सा में मूरत छै
सच्चो सें सुन्नर, की देखै में सूरत छै !
एक्के दूकानी में भीड़ केन्हों मेला रँ
लागै सँकराती में बौंसी रों खेला रँ
हदहद करै छै लोग; आबै छै, जाबै छै,
अपना कें गेना अकेलों पर पाबै छै ।

दू कोस सें झटकी कें चली कें ऐलों छै
माथा पर कसकेंलों मोटरी उठैलों छै
इक-इक नस देहों रों बाहर दिखाबै छै
बोझो छै हेनो कि गोड़ थरथराबै छै
घामों सें लथपथ छै देह, चुवै मेहे रँ
धुरदा सें सनलो देह, देह लागै देहे रँ
धौंकनी रँ साँस चलै, मुँह तमतमैलो छै
दू कोस सें झटकी कें चली कें ऐलो छै
सामन्हैं में सेठ विरिजवासी-दुकानों में
रखना छै नीचें, कुछ ऊपर दलानो में
रक्खी कें, टाका लै चललै; मन चूर-चूर
गोड़ गिरै जै ठां, मन ओकरा सें दूर-दूर
खोली में आबी कें गिरलै चित्त, बेसुध होय
गिरै छै गाछी सें कटलो ठार जेना कोय
देहो डोलाबै के शक्ति नै बचलो छै
गिरलो छै जेना देह, होनै कें गिरलो छै
खोली में गेना छै आरो अन्हरिया छै
आँखो में रात गड़ै; देहो में बोरिया छै ।

चाहै परकाश करौं, घोॅड़ मतुर चूर-चूर
मन चाहै उठै लेॅ देहे पर दूर-दूर
थकलोॅ मोॅन, चुरलोॅ देह, भुखलोॅ अटट्ट छै
गिरलोॅ छै गेना चित्त, किंछा सब पट्ट छै ।

हेनै केॅ थकलोॅ रोज गिरै छै खोली मेॅ
जेनाकि ओकरे रेॅ ओकरे ही टोली मेॅ ।

टोली रोॅ लोगोॅ केॅ देखी केॅ हहरै छै
बेढंग बेवस्था पर मने-मन कुहरै छै
सोचै छै, समझै छै, बूझै छै, गुनै छै,
भाँगलोॅ नसीबोॅ पर माथा केॅ धूनै छै
‘झुट्ठे ई नारा-परचार सब्भैं केॅरै छै
आपने लेॅ, आपने रेॅ लोगोॅ लेॅ मेॅरै छै ।

‘‘नारा गरीबोॅ रोॅ, सौदा अमीरी के
खुब्बे ई शासन छै बस जी हजूरी के !

‘‘केकरा छै मतलब गरीबोॅ रोॅ बातोॅ सेॅ
पैसा कमाना छै लातोॅ सेॅ, जातोॅ सेॅ
सामरथ केॅ पैसा छै, पदवी, मनोरंजन छै
एक्के गरीबोॅ रोॅ खाली दुरगंजन छै
टाका छै जेकरा, लड़ाबै छै लोगोॅ केॅ
बूनै छै मनोॅ मेॅ की-की नै रोगोॅ केॅ।

‘‘भुक्खड़ की करतै; ऊ लालच मेॅ बिकथैं छै
जे-जे सिखाबोॅ सब हेना मेॅ सिखथैं छै
नारा दिलबाबोॅ, गिरबाबोॅ वोट मेॅनोॅ सेॅ
कीनी ला जे छै गरीबोॅ केॅ धेॅनोॅ सेॅ !

''कल जों गरीबो भी बड़का रँ होय जैतै
मनबिच्छा राजा कें गद्दी की नै देतै ?

''गद्दी बचाबै लें राजां ई जानै छै
टाका, गरीबी अें जातों कें मानै छै
जाती में बाँटी कें सब्भे मनुक्खों कें
बाँटलें छै राजा नें अपना में सुक्खों कें ।

''हिन्नें सब जातों रों फेरा में ओझरैलों
मुठ्ठी भर अन्नों लें केन्हों छै टौव्वैलों
केकरा समझाबें के ? कोय भी समझतै की
हेनों बौरैलों छै, कुच्छू कोय बुझतै की
राजा तें ठिक्के सें रहतै हीं; रेंहै छै
परजा कें सहना छै जे-जे, से सेंहै छै
सेंहै छै हेनै कें ? आपनों करतूतो सें
है जे टौव्वावै छै—उच्चों-अछूतों सें !

'खूब्बे परचार करों उच्चों-अछूतों रों
आदमी रों बस्ती में आदमी के भूतों रों
पत्थर कें पूजै छै, घिरना मनुक्खों सें
फाटतें होतै छाती देव्हौ रों दुक्खों सें ।

''पूजा में, प्रेमों में, स्नेहों में, भक्ति में
गिरला कें ऊपर उठावै के शक्ति में
शांति छै, जीवन छै, पापों रों मुक्ति छै
सुक्खों सें रेंहै रों यहें एक युक्ति छै ।

''लोगें नै मानें छै, लड़ै छै । की करभौ!
जरै छै जानी कें, जेंरै लें दौ । की पड़भौ !

मतुर ई जानले छै—ई तें एक आग छेकै
चानों के मुँहों पर करिया रँ दाग छेकै
मिली कें रेंहें दें यैं नै मनुक्खों कें
सुक्खों रों लहू पिलाबै यैं दुक्खों कें
आरो ई जब तक दुख रहतै, ई मानले छै
टाका पर बिकथैं ही रहतै सब, जानले छै ।

''थोड़ों टा सुक्खो ं ले ं जिनगी रों दुक्खो ं कें
जोड़ै छै, आरो बोहाबै छै सुक्खों कें
केकरा समझाबें के; कोय्यो समझतै की
हेनों बौरैलों छै, कुछ्छू कोय बुझतै की
जाति रों बल्लों पर, धरमों के नामों पर
हीरा की मिललो ं छै कौड़ी के दामों पर ?

''लेंड़ै के छेकै गरीबी सें ँ; लड़तै नै
अच्छा जे रस्ता छै, ओकरा पर बढ़तै नै
लेंड़ै के छेकै मनुक्खों रों दुश्मन सें ँ
लड़ै छै कोयरी सें ँ, कैथों सें ँ, बाभन सें ँ ।

''सब्भे जातों मे ँ कोय पापी तें होतै छै
ओकरों संग कैन्हें कोय जाति कें जोतै छै
ई तें एक चाल छेकै आदम रों शतरू के
भूलो सें ँ समझों नै भूल कभी बुतरू के
जौनें नै चाहै छै आदमी रों सुक्खों कें
जाति रों नामें लड़ाबै मनुक्खों कें ।

''हमरा नै समझै मे ँ कटियो टा आबै छै
जाति मे ँ आखिर की केकरा बुझाबै छै
आपना कन राम छेलै, कृष्ण छेलै, व्यास भी
गौतम भी, बाल्मीकि, संत रैदास भी

जातिये के कारण की हिनी महान छेलै'
आरो की यै वास्तें—हिनका मेँ ज्ञान छेलै ।

''जाति रोॅ बल्लोॅ पर खाड़ोॅ के रहलोॅ छै
व्यासें नेँ 'भारत' मेँ आखिर की कहलोॅ छै—
कर्मैं बनाबै छै जाति मनुक्खोॅ रोॅ
भुलबे ई बातोॅ केॅ जोॅड़ छेकै दुक्खोॅ रोॅ
अच्छा मनुक्खोॅ केॅ दुनियाँ ही खोजै छै
कौने नै विष्णु केॅ, शंभू केँ पूजै छै !

''शुंभो भी कैन्हें नी घर-घर पुजाबै छै ?
लोगोॅ केॅ समझै मेँ कैन्हें नी आबै छै ?
''आपने नै चेततै, तेॅ लोगें लड़ैतै नै
उच्चोॅ-अछूतोॅ के खोड़ा पढ़ैतै नै
लड़ौ, तेॅ हमरा की ! लेकिन ई लड़ला सेँ
राकस रोॅ रस्ता पर जानी केॅ बढ़ला सेँ
होतै की ? लड़तै सब, लोगोॅ रोॅ नाश होतै
धरती पर भूतोॅ-पिचासोॅ रोॅ बास होतै
लोगोॅ रोॅ रहतै बस एक्के कहानी ही
लागतै बुझव्वल रँ, एकदम पिहानी ही।

''घेॅरोॅ मेँ बाघोॅ रोॅ, बानर रोॅ बास होतै
मन्निर मेँ देवोॅ ठाँ राकस रोॅ रास होतै
होतै तेॅ हमरा की ! हमरोॅ के मानै छै
केॅथी लेॅ उच्चोॅ-अछूतोॅ केॅ ध्यानै छै
ध्यानौ, तेॅ हमरा की ! लेकिन है ध्यानला सेँ
लोगोॅ के लोगोॅ मेँ भेदभाव मानला सेँ
लड़थैं ही रहतै सब आरो गरीबी ई
जाबेॅ नै पारेॅ छै केन्हौं केँ आभी ई ।

''राजा तेॅ चाहतै छै, लेॅड़ौ कोय बात लै
'मुँहोॅ मेॅ धरमोॅ कें, माथा मेॅ जात लै'

''हुन्नें तें राजा रोॅ छक्का छै छक्का पर
टाका हँसौतै छै थक्का रोॅ थक्का पर
घूमै छै सरंगोॅ मेॅ, वायु सेॅ बात करै
टाका रोॅ बल्लोॅ पर दिनोॅ केॅ रात करै
छन्है मेॅ सागर के पार, छन्है दिल्ली मेॅ
हमरे रँ ठोकलोॅ छै बाँसोॅ रोॅ किल्ली मेॅ !
बगुला रँ कपड़ा मेॅ टोपी की धारै छै
महकै छै चन्दन—पसीना जों गारै छै
आबै तेॅ की रँ के हद-हद-हद भीड़ जुटै
देखे मेॅ, केकरो मूँ-हाथ, कहीं गोड़ टुटै ।

'देवथौ कें देखै लें एत्तें नै लोग जुटै
बाबू हो, सरंगोॅ मेॅ बिग्घिन रँ लोग टुटै !

''राजा केॅ है सबसेॅ मतलब की ? भाखै छै
धरती सेॅ ऊपर ही टाँग-हाथ राखै छै
के नै ई जानै छै—एत्तें कुछ, टाका लें
हाय-हाय केरै की देशोॅ लेॅ ? टाका लें
चाहै छै, भरौं तिजोरी मेॅ, घेॅरोॅ मेॅ
छपरी मेॅ, ठारी मेॅ, मिट्टी के तेॅरोॅ मेॅ
सोचौ तें, यै मेॅ छै परजा रोॅ भाव कहाँ
केकरो लेॅ छोड़ै छै तनियो टा दाव कहाँ
केन्हौं केॅ सबटा हसौतै मेॅ लागलोॅ छै
परजा रोॅ राजोॅ मेॅ राजा-भाग जागलोॅ छै ।

''केकरा छै ताकत कि राजा केॅ रोकी लौ
भूलो सेॅ अनचोके कथू लेॅ टोकी लौ

लड़तै सब आपसे मेँ, राजा केँ रोकतै की
आपने झोकैलोँ छै, दुश्मन केँ झोंकतै की !

''कोय की सराहै लायक ! केकरा तों कहबौ की
आपने मूँ जरलौं छौं; दूसरा केँ दूसबौ की
जब ताँय दिल साफ नै लोगोँ रोँ हुऐ छै
मेंनें नै मनोँ केँ नजदीक सेँ छुऐ छै
तब ताँय गरीबी मिटाबौं; विचारे की ?
पहुनोँ दलिद्दर सेँ छूटै के चारे की ?
शोषण-व्यवस्था, गरीबी मिटाबै लेँ
लोगोँ सेँ लोगोँ केँ लागेँ जुड़ाबै लेँ
तभिये कोय काम हुऍ पारै छै सुक्खोँ रोँ
नै तेँ बिण्डोबोँ ई देखथैं छोँ दुक्खोँ रोँ ।

'नै करै राजा पर चाहियोँ की ? क्षेम करेँ
सौंसे समाजोँ रोँ परजौ सेँ प्रेम करेँ
राजा तेँ राजै छै ! परजो मेँ भेद की
चलनी मेँ छेद हुऍ, घैलोँ मेँ छेद की ?

''ज्ञानी जे राजा छै—वैं ई सब समझै छै
परजा रोँ रूपोँ मेँ ईश्वर केँ बूझै छै
आबेँ पर है रँ के राजा रोँ लोप भेलै
यै लेँ कि पंडित सब, काजी सब, पोप भेलै
देखै छी सब्भे अधर्मे मेँ हेलै छै
मट्टी केँ हपकै छै, पापोँ सेँ खेलै छै ।

''पापे नी छेकै कि धरमोँ के नामोँ पर
लड़ै, लड़ाबै छै, काटै छै दुनियाँ भर
माँटी मेँ देश मिलेँ, गाँव मिलेँ, लोग मिलेँ
लोगोँ रोँ लोगोँ सेँ पुस्तैनी प्रेम हिलेँ

है रँ के धरमोॅ सेॅ अच्छा अधर्मे नी !
रहबोॅ विधर्मी; कोय कहतै बेशर्मे नी !
धर्मोॅ रोॅ झंडा जे देश-दोस्त बाँटै छै
खूनोॅ रोॅ रिश्ता केॅ झाड़ू सेॅ झाँटै छै
एकरा सेॅ बेंढ़ी केॅ पाप आरो की होतै
धर्मे नी शाप तबें ? शाप आरो की होतै ?

''अलबत ई लोगो छै, समझै नै, बूझै छै
धरमोॅ के नामें अधरमे बस सूझै छै
केॅथी लेॅ ? की मिलतै—टके-सिंहासन नी !
ज्यादा सेॅ ज्यादा इनरासन रोॅ शासन नी ?

''कौनें अमरितोॅ रोॅ धार पीबी ऐलोॅ छै
ब्रह्मा रोॅ किस्मत केॅ बान्ही केॅ लानलोॅ छै
दू दिन रोॅ ताम-झाम फेरू फगदोले नी
हंसा बिन जलतै शरीरोॅ के खोले नी
के फेरू हमरा लेॅ ? हमरोॅ लेॅ की रहतै
सम्पत ? सिंहासन ? की इनरासन साथ जैतै
पदवी ? प्रतिष्ठा ? की कंचन रे काया ई ?
जात-पात, धरम-वरन, धरती रोॅ माया ई !

''मट्टी, आकासोॅ, बतासोॅ रोॅ, आगिन रोॅ
देहोॅ रोॅ भागे की निट्ठा अभागिन रोॅ !

''तहियो है देहोॅ रोॅ मानलोॅ छै, मोल छै
कत्तो ई आगिन रोॅ, पानी रोॅ खोल छै
मिट्टी रोॅ देहोॅ सेॅ कटनौ तेॅ मुश्किल छै
हंसा-कुहंसा सब एकरै मेॅ शामिल छै
देहे नै रहतै, तेॅ उच्चोॅ विचार कहाँ
देवोॅ रोॅ, दुखियो रोॅ, केकरो उपकार कहाँ

हंसा कें साधै लें येंहो तें जोगनै छै
जे कुछ यैं भोगै छै, ऊ सब तें भोगनै छै

‘‘लेकिन सीमानै में सब्भे कुछ ठीक छै
गाड़ी कें हाँकै लें बनले तें लीक छै
लेकिन के हाँकै छै ! हाही रों मारलों सब
साँसों रों धौंकनी सें हंसा तक जारलों सब
एकरै सें दुनियाँ में हेल्तें ई हाय-हाय
पश्चिम सें लै कें पूबारी तक कांय-कांय ।

‘‘है रँ रों लछ्छन में दुनियाँ सुधरतै की !
पेटों रों रेसों में कमजोरें करतै की ?

‘‘एकों रों देह सूखी करची रँ बनलों छै
दुसरा रों पेट फूली बेलुन रँ तनलों छै
देवता रों रस्ता सुझैतै की, देहे नै ?
हरियैतै धरती की ? सरंगों में मेहे नै !

‘‘भाखन दै राजां विचारों सब सुन्नर रों
धरती पर बसवै, समृद्धि सब इन्नर रों
एकदम झूठ; भरलों छै पेट तहीं बोलै छै
आसन पर साँपों रँ देह तहीं डोलै छै
की बसतै, धरती पर स्वर्ग; सभे जानै छी !
जनमी कें कानलौं, तखनिये सें कानै छी !

‘‘जेकरा जरूरत छै जतना, ऊ मिलें तें
कोढ़िये में कुम्हलैलों फूल पहिलें खिलें तें
धरती पर स्वरगों कें होनै छै, आनै छै,
कल्पवृक्ष सुक्खों रों जानी लें खिलनै छै !

''एकरा में राजा कें पहिनें सुधरना छै
उच्चो पेट काटी कें खलिया कें भरना छै
आरो जरूरी छै लोगो रों शिक्षा के
परहित रों आरो संतोखों रों दीक्षा के
ओकरा बताना छै—एत्ते ई जोड़े में
स्वर्ग कहीं धरलों छै माथा कें फोड़े में !

''माँटी रों देहो रों एत्तो की ताम-झाम !
एक दिन तें होनै छै अर्थी पर राम ! राम !
लहकी कें सारा पर मिट्टी में मिलनै छै
कत्तों मजबूत करों पाया ई हिलनै छै

''एकरै लें एत्तें ई सोना जुटावै छै !
एत्तें, कड़कड़िया ई रौद में टटावै छै !

'देहों लें देहे भर ! हंसा लें जोड़ना छै
हाही रों जब्बड़ दीवारी कें तोड़ना छै
जोड़ना की जाति रों नामों पर ? धरमों पर ?
कथी लें कूदै छै कुत्ता के करमों पर !'

'जानें ऊ दिन कहियो की घुरतै देशों में
एक्के रँ लागतै सब एक्के रँ भेषों में
एक्के रँ बोलतै सब मिसरी रँ बोली में
मन मोहतै; नैकी बहुरिया जों डोली में
आरो बस एक्के जात होतै मनुक्खों रों
घुरतै ई देशों में कहिया दिन सुक्खों रों
कहिया दिन ऐतै, कुधरमों कें छोड़ी कें
जात-पात, ऊँच-नीच-परथा कें तोड़ी कें
रहतै सब आपने रँ आपनों ई देशों में
एक्के रँ लागतै सब एक्के रँ भेषों में

'रूप-रँग सब्भे रों सब्भे रँ होतै पर
मेंनों के रूप-रँग एक्के रँ होतै पर
कानतै कोय, सब्भे रों आँखी में लोर होतै
गुजगुज अन्हरिया में कहिया है भोर होतै ?
जमतै चौपाल कबें फेरू दुआरी पर ?
बिरजू रों ऐंगना में, रमजू खमारी पर ?
मिसिर का, मंडल का, दत्ता दा साथ होतै ?
दुनियाँ भर लोगों रों दुनियाँ भर बात होतै ?
सरजू सिंह जादव रों विरहा की ! चैता की !
मेंनों सें होन्हे चौपालों में गैता की ?
रानी सुरँगा रों, कमला रों गीत हौ !
बिहुला रों वाला सें मरल्हौ पर प्रीत हौ !
राजा सलेसों कें सपना हौ मैया रों !
कसकै करेजों जे सुनथैं सुनवैया रों !
जानें ऊ दिन कहिया की घुरतै देशों में ?
मंगरू दा मोहतै भर्तृहरि रों भेषों में !

''पूजा में, परबों में मिलतै सब होन्है कें
मानतै सब, सब्भे कें जेना कि पहुन्है कें ।

''काली-दशहरा में नाटक हौ राणा रों !
मंचों पर चलती हौ केशरिया बाना रों !
बाबू कुँमरजी रों देशों लें कुरबानी !
झन-झन-झन झाँसी रों असकल्ली मर्दानी !
आरो कौशल्या रों कानबों हौ राजा लें !
रामों रों राजपाट सब्भे टा परजा लें !
रावन रों राजों में सीता रों साहस हौ !
लक्ष्मण रों मुरछा पर रामों रों ढाढ़स हौ !
नाटक की नाटक रँ लागै ! बस सच्चे रँ
दशरथ रों बच्चो जों कानै तें बच्चे रँ !'

''आबेॅ हौ बात कहाँ, सब्भे रोॅ साथ कहाँ
अच्छा सत्कर्मी ॅ मे ॅ दस ठो रो ॅ हाथ कहाँ
केॅहाँ हौ मस्ती छै ! केॅहाँ मे ॅ धूमधाम !
केॅहाँ रामलीला मे ॅ भीजै छै सीताराम !

''कहाँ हौ होली के रँगो ॅ रोॅ छर्र-छर्र !
गिरै पिचकारी से ॅ दूधे रँ गर्र-गर्र !
बदली जाय देहरी-दुआरी के रँगे-रूप
गिरै असमानोॅ से ॅ एकदम गुलाबी धूप
मिरबा का, मंटू दा, मटरू दा, चौरासी
लछमनियाँ, लपकी बहुरिया रो ॅ नन्दोसी
पचकौड़ी (पोता पुरहैतो ॅ रो ॅ) ढोढ़ी दा'
छोड़ै की केकरौ ? है कहलो ॅ पर-'छोड़ी दा !

''हुन्ने ॅ बुलाकी रो ॅ सब्बड़ कनियैनो की !
सामना मे ॅ ठेॅठै मरदाना मेहमानो की ?
रूपसा, बरमपुर रो ॅ, डाँढ़े, झपनिया रो ॅ
आँखी मे ॅ नाँचै छै होली दुल्हैनियाँ रो ॅ !
उड़ै अबीरो ॅ रोॅ बादल; रँग बरसै की !
भीजै सब एक्के ठाँ; भीजै लेॅ तरसै की !
की गोरो ॅ, की गेहुआँ, रँगो ॅ-अबीरोॅ से ॅ
लागै कन्हैये रँ आपनो ॅ शरीरोॅ से ॅ
होन्है केॅ कहिया सब मिलतै ई देशोॅ मे ॅ
एक्के रँ लागतै सब एक्के रँ भेषोॅ मे ॅ !

''ऐतै ते ॅ ऐतै ही, बाकी कुछ देर छै
ऐलो ॅ नै सुख छै ते ॅ कर्मे रोॅ फेर छै
धरती रो ॅ बेटा नै आभी ताँय जगलो ॅ छै
किस्मत मे ॅ फेरा शनिच्चर रोॅ लागलो ॅ छै

फेरा ई टुटनै छै, आदमी केॅ जागनै छै
कत्तेॅ देर ग्रसतै चान ? राहू केॅ भागनै छै
मिलतै सब भेद-भाव भूली केॅ आदर सेॅ
पूजा रोॅ जोग मानी हमरो रँ कादर सेँ
सुग्गे रँ मीठ्ठोॅ बोल, बोलतै सब आपस मेँ
अन्तर तेॅ आनै छै लोगोॅ मेँ, राकस मेँ
एक्के रँ सोचतै सब, एक्के वेवहार-बात
प्रेमे एक धर्म होतै आरो मनुक्खे-जात
घुरी केॅ बितलोॅ दिन आन्हैं छै देशोॅ मेँ
एक्के रँ लागतै सब एक्के रँ भेषोॅ मेँ !

''खुब फूलेॅ, झूमेॅ, गाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
देश केॅ सुन्दर बनाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
होय अचंभित बोलेॅ कोयल भी बनोॅ मेँ आम रोॅ
बोल कुछ हेनोॅ सुनाबेॅ लोग हमरोॅ गांव रोॅ !
रूठी केॅ चल्लोॅ गेलोॅ छै शांति बीजू वन मेँ जे
दूत लानै लेॅ पठाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
जे महत्मा, पीर, पंडित नेँ बतैंनें छै यहाँ
बात ऊ भुललोॅ बताबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
दिल मेँ उमड़ेॅ प्यार रोॅ गंगा नदी, सिंधु नदी
राग कुछ हेनोॅ सुनाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !

''लीक सें बेलीक होय चल्लै बहुत, आबेॅ रुकेॅ !
बुद्ध बनना छै कि अँगुलीमाल भी आगू झुकेॅ !
रास्ता बाकी बहुत छै, वक्त थोड़ोॅ छै मतुर
राह मेँ है रँ झगड़बोॅ केकरा शोभै छै ! अधुर !
बात है सब केॅ बताबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
खूब फूलेॅ, झूमेॅ, गाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !

''लूट, हिंसा, द्वेष, धिरना पूँजी नै हमरोॅ छिकै
हम्मेँ सब ऊ नै छिकौं जे पाप रोॅ धन पर बिकै
खून मेँ हमरोॅ घुलै छै राम-राणा रोॅ लहू
कष्ट देखी के हहरलै हमरोॅ पूर्वज की कहूँ ?
तेॅ केना हम्में हहरबै पाप रोॅ अन्याय सेँ ?
की कहूँ प्रह्लाद जललै होलिका के हाय सेँ ?
मानलौं कि देश मेँ फेरू दुशासन-जोर छै
द्रोपदी रोॅ आँख मेँ डबडब-लबालब लोर छै
दै हँकारोॅ कुंभकरणोॅ रोॅ बलोॅ पर दशमुहाँ
वीर देशोॅ रोॅ लखन अेॅ रामो पर डरलोॅ कहाँ ?
रास्ता हमरा बनाना छै वनोॅ रोॅ बीच सेँ
भेंटबे करतै, मतुर डरना की बाघोॅ-रीछ सेँ !
राजां परजा सेबतै फेरू भिखारी भेष मेँ
रास रचनै छै फिरू सेँ ही समुच्चे देश मेँ
सीख सन्तोॅ रोॅ सिखाबेॅ लोग हमरोॅ गाँव रोॅ !
खूब फूलेॅ, झूमेॅ, गाबेॅ, लोग हमरोॅ गाँव रोॅ''

देखै छै सपना की सुन्नर—सब हाँसै छै !
गुजगुज अन्हरिया मेँ गेना निरासै छै ।

पतझड़-खण्ड

जे तरह सन्यासी तेजै गद्दी या धनधाम
आरो जोगीं तृष्णा-माया-लोभो-रागो-काम
जों पति-परदेश पर तिरियां तजै सिंगार
तेहने तेजै पीरोँ पत्ता केॅ निपत्तोॅ डार

नागा हेनोॅ धारा-पाँती मेँ खड़ा छै गाछ
खोली कें सौंसे बदन कान्हा सेँ लैकेॅ काछ
रात मेँ ई ठूँठ लागै नँग धडंग रँ भूत
दिन मेँ लागै खाड़ोॅ छै श्मशान मेँ अवधूत

सामना मेँ ठूँठ पीपर रोॅ सहस्त्रो डार
जों बुझाबै छै सहसबाहु के ही अवतार
आकि पत्तावाला डाली भेलै धरती तोॅर
आरो जेना भै गेलोॅ छै उल्टै ऊपर जोॅड़
बोहोॅ पत्ता रोॅ बहै छै; दै हवां छै जोर
लड़खड़ावै, खड़खड़ावै छै, करै छै शोर
हरहराय केॅ खड्ड-खाई केॅ करै छै सोॅर
जे जहाँ छेलै वहीं पर भै गेलोॅ छै तोॅर

एक सन्नाटा उदासी छै परोसलोॅ शांत
गूंजै छै जों, खड़खड़ाहट सेँ समुच्चे प्रांत

हलहलाबै एक अभियो पर बरोॅ रोॅ गाछ
दूर सबसेँ, रीतु पतझर केॅ नचैतेॅ नाच

जोॅड़ निकली केॅ तना सेॅ भै गेलोॅ छै तोॅर
के उजाड़ेॅ ? देखथैं लागै हवा केॅ जोॅर
सब जगह के पंछी आबी केॅ लेलेॅ छै ठाँव
गूंजी रहलोॅ छै टी-वी-टू, कुहू आरो काँव

ताही नीचेॅ बैठलोॅ गेनां निरासै ठूँठ
सोचै, सचमुच जिन्दगी की व्यर्थ ? बिल्कुल झूठ ?
बाँचै रही-रही पत्र झुनिया रोॅ; ऐलोॅ छै आज
एक आखर पढ़थैं जेकरोॅ छै गिराबै गाज

छै लिखै कि 'बड़का बाबू, की लिखौं सब हाल
खाट पर पड़लोॅ होलोॅ छै माय रोॅ कंकाल
आठ बरसोॅ रोॅ समय रोॅ आबी गेलै अंत
बीच मेॅ आबी केॅ कहियो भी नै लेलौ तंत

''तों कमाबै मेॅ सभै लेॅ छौ वहाँ मशगूल
माय रोॅ मूँ पर यहाँ उड़तेॅ रहै छै धूल
की पता तोरा वहाँ छौं, बौंसी रोॅ सब हाल
अबकि अगहन खेत मेॅ कत्तेॅ रहै बेहाल

''एक दिन पड़लोॅ छेलै भादो फिरू सब शांत
पड़लै की ! कानलोॅ छेलै देखी धधकलोॅ प्रांत
कौआ-कुत्ता कानतै रहलै अघन के बाद
देह दै-दै खेत केॅ लोगेँ बनाबै खाद

''लोग दाना लेॅ मरै छै, गिद्ध रोॅ छै मौज
आठ बत्तिस रोॅ कन्हा पर गुजरै एक दिन ? रोज

हर कहो जी ! हर कहो जी ! राम ही एक सत्त
गूंजै सद्धोखिन, घुमै छै मिरतु निर्भय-मत्त

‘‘छोॅ दिनोॅ रोॅ भुखली रधिया के भेलै कल मौत
भाग्य सबके साथ घूमै छै बनी केॅ सौत

‘‘जखनी रधियाँ दम तोड़लकै तखनी ओकरोॅ माय
की तरह सेँ छाती पीटै, रुदन करतें हाय
जों कबूतर लोटनी ही; आँखी में लै लोर
कै दिनोॅ तक रात-संझा आरो करतेॅ भोर

‘‘आखिरी मेँ भूख नेँ मय्यो रोॅ लेलकै जान
रधिया पहिनें; माय पीछू सेँ गेलै श्मशान’

‘लोग दुबड़ी-घास नोची केॅ मिटाबै भूख
गांग सेँ ज्यादा पवित्तर होय गेलोॅ छै थूक

आबेॅ पतझर जे भेलै, पत्ती नै; केन्होॅ हाल
बुतरूओ थोथोॅ मुँहोॅ सेँ छै चबाबै छाल

‘‘छाल बिन केन्होॅ लगै छै गाछ ! सब रोॅ धोंड़
आदमी हपकी गेलोॅ छै नीम तक के जोॅड़

‘‘घर रोॅ पिछुवाड़ी मेँ तोहरे ही लगैलोॅ बेल
जै पेॅ झुलवा तोंय लगाय हमरा खेलाबौ खेल
आरो पत्ता केॅ चढ़ाबोॅ शिव केॅ भोरे-भोर
छाती फटतौं देखी केॅ रुकतौं जरो नै लोर

‘‘छाल ओकरे नी उबाली कटलै दिन तेॅ रात
आबेॅ ऊ भी नै दिखै छै; मृत्यु लै छै घात

हमरा की ? हम्में तें लै छी माँटियो भी खाय
भूख सें बनलों बिछौना खाट पर छै माय !

'आखिरी ये वक्ति जेनों लै हमेशे साँस
चाहै छै बोलें लें कुछ; गल्ला में फसलों फाँस

'आँख खोलै, खुल्ले ही घन्टो रहै छै आँख
भूलो सें नै बन्द होय छै पलक रों दू पाँख
बन्द होय छै तें जेना खुलबे नै करतै हाय
बड़का बाबू, आबें नै बचती लगै छै माय

''सनसनाठी रँ भेलों छै गोड़ आरो हाथ
ठीक सें साँसो कि जेना दै नै ओकरों साथ
खुल्ला आँखी में जलै श्मशान जेना हाय
बड़का बाबू, आबें नै बचती लगै छै माय''

पढ़ी-पढ़ी फाटै चित्त कपड़ा घुनैलों रँ
लोर ढरै गेना रों आँखी सें गिरै टपटप

जेकरा कि मूड़ी दायाँ-बायाँ करी पोछी लै छै
बाँही सें । नै देखें कोय यही लेली झबझब
मों न करै बच्चे रँ भोक्कार पारी कानौ पर
रहै छै दोनों ही ठोर खाली करी कपकप
हुमड़ै छै बन्द मूँ में कानबों गेना रों आरो
आँखी में दिखाबै लोरों केरों मोती दपदप ।

कानों में गूंजै छै बात केकरों ई घुरी-घुरी
झुनियाँ रों बाबू छेकें कानी-कानी बोलै छै

'तोहें डोलो॑ शहरो॑ के शान-शौक-मौजे मे॑ँ ही
मरै तुल झुनियाँ रो॑ माय हुन्ने॑ डोलै छै
बड़ो॑-बड़ो॑ बात करै छेलौ, मरै तुल छेलाँ
आदमी ते॑ सूने मे॑ँ ही मो॑न-धो॑न खोलै छै
आय जत्ते॑ झुनियाँ रो॑ दुख से॑ँ दुखित नै छी
तोहरो॑ विचार कहीं ज्यादा मो॑न झोलै छै ।

दागी देले॑ रहे॑ देह छो॑ड़ धीपलो॑ से॑ँ जेना
जेना छेदी देले॑ रहे॑ आर-पार तीरो॑ से॑ँ
धीपी कनपट्टी गेलै—लाल-लाल लोहो॑ लाल
रहे॑ पारलै नै गेना तनियो टा थीरो॑ से॑ँ
घामो॑ से॑ँ नहैलै हेने; जेना, सुनी-सुनी बात
कानै छै दुखित होय सौंसे ही शरीरो॑ से॑ँ
चिन्ता, असगुन, याद, सोच से॑ँ बन्हैलै हेनो॑
जेना हिरनौटा बंधे॑ हाथी के जंजीरो॑ से॑ँ ।

घूमै छै आँखी मे॑ँ फगदोल झुनियाँ रो॑ माय के
'राम नाम सत्त है' गूंजै छै दोनो कानो॑ मे॑ँ
गेना आगू-आगू फगदोल पीछू लोग सब
रही-रही घूमै छै दिरिश यही ध्यानो॑ मे॑ँ
छाती पीटी-पीटी हकरै छै, लोटै, माथो॑ चूरै
झुनियाँ कानै छै; जेना, भाला गाँथै जानो॑ मे॑ँ
हेनो॑ कुम्हलाय गेलै गेना रो॑ बदन सौंसे
जेना कि गहन लागी गेलो॑ रहे॑ चानो॑ मे॑ँ ।

उठै-गिरै, गिरै-उठै मनो॑ मे॑ँ विचार फेरू
देखै छै कि झुनियाँ रो॑ माय आँख मीचै छै
'मरतै की जीते जी ही हमरो॑ ?' ई सोचथैं ही
लागै जित्तो॑ गेना रो॑ ही खाल कोय खीचै छै

'ई नै होतै ! ई नै होतै ! केन्हौं कें भी ई नै होतै !
पूरा ई विश्वास साथ गेना साँस घीचै छै
बहै छै आँखी सें लोर आकि जमलों होलों कें
जानी कें बेकार, बेसी, आँखी सें उलीचै छै ।

एक बार झोली सौंसे देह कें सजग भेलै
आँख मीची कस्सी कें निहारै फेरू चारो दिश
मुट्ठी बान्है, मनों में विचार करै कत्तें-कत्तें
चलै छै अभीयो वही अन्धड़-पानी के ढीस
थमै छै मनों रों हौलदिल आबें; जेना, साँप
मार खाय लोटै, झाड़ै आखरी समय रों रीस
मुँहों पें चमक आबी गेलै खिली गेलै मों न
जली-जली राख भेलै, गेलै कुम्हलाय टीस ।

घूरै छै आँखी में सौंसे गाँव, घों र, लोग, जों न
देखै छै गेना कि जेना सब्भे दिश दौड़ै छै
केकरो जाँतै छै गोड़, केकरो दबाबै देह
केकरो लें कंद-मूल वनों में जाय तोड़ै छै
केकरो खिलाबै छै, पिलाबै छै दबाय-दारू
सब्भै सें ही नेहों रों सम्बन्ध दौड़ी जोड़ै छै
छोड़ै छै नै जात, परजात, पों र-परिजन
जेना झुनियाँ रों रोगी माय कें नै छोड़ै छै ।

देखै छै कि भूखों सें भुखैलों लोग हेनों लागै
जेना कोय बच्चा नें बनैलें रहें तस्वीर
हाथ गोड़ लम्बा-लम्बा, डगमग, पेट आरो
पीठी रों पता नै रहें; अँगुरी जों रहें तीर
आँख रहें खोड़र ही, डीम; जेना, जीभ रहें
देखी कें भौआय गेलै, गेना भै गेलै अधीर

सोचै छै ई आदमी रोॅ हाथ, गोड़, देह छेकै ?
काठी खासी-खोसी गढ़ी देलेॅ छै सौंसे शरीर ।

देखै छै गेना कि गेना दौड़ी-दौड़ी पानी लानै
छानी लानै, चुरू-चुरू प्यासला पिलाबै छै
माँगी लानै केकरौ सेॅ बाजरा या मड़ुआ केॅ
आरो खतकाय वहेॅ केकरो खिलाबै छै
जड़ी केॅ उखाड़ी लानै, केकरो बाँही पेॅ बान्है
केकरो लेॅ कूटी छानै, मोॅद मेॅ मिलाबै छै
कालें नेॅ मारी देलेॅ छै जेकरा कि थोकची केॅ
ओकरौ भी गेना छूवी छनै मेॅ जिलाबै छै ।

जेना मधुमास मेॅ पलास वन लहकै छै
शोभै छै सरंग पनसोखा रंग पाबी केॅ
माय-मोॅन जेना भरी उठै मद-मोद सेॅ छै
फूल हेनोॅ छाती मेॅ सोना रोॅ लाल पाबी केॅ
होन्हे गेना रोॅ सेवा सेॅ सब्भे छै सरस-सुखी
ओकरोॅ निस्वार्थ प्रेम, त्याग-धोॅन पाबी केॅ
जेना परदेश मेॅ खुशी सेॅ कोय झूमी उठै
आपनोॅ देशोॅ रोॅ चैता, गोदना केॅ गाबी केॅ ।

देखै छै तबैलोॅ ताँबा हेनोॅ देह चमकै छै
रूप; आग मेॅ गलैलोॅ चाँदी हेनोॅ चमकै
सब्भे रोॅ मुँहोॅ पेॅ वही पुरबी छै, समदौन
झूमर के बोल घुँघरूवे हेनोॅ छमके
सुनी-सुनी सोहर के सुर, सुन्दरी रोॅ पाँव
आगू नै बढ़ै छै रुकी-रुकी जाय, ठमकै
टोला-टोला मेॅ चली रल्होॅ छै वही गीत-नाद
कानोॅ मेॅ गेना रोॅ वही ढोल-झाल झमकै ।

आरो देखै छै गेना कि दौड़ी-दौड़ी लोगोॅ पीछू
गेना पड़ी गेलोॅ छै बीमार बड़ी जोरोॅ सेॅ
हाथ गोड़ झामे रँ झमैलोॅ, कँपकँपी छूटै
पटपरी पड़ी गेलोॅ लहू चुवै ठोरोॅ सेॅ
रसेॅ-रसेॅ ऐंठन उठै छै, उठले ही जाय
दरद देहोॅ मेॅ फैलै उगी पोरोॅ-पोरोॅ सेॅ
तहियो छै सबरोॅ सुखोॅ सेॅ सुखी, हा ! हा ! हाँसै
बान्है; नै बन्हाबै आधि डायन के डोरोॅ सेॅ ।

बसन्त-खण्ड

बहै छै हवा रेशमी गुदगुदाबै
कली कें दै किलकारी-चुटकी खिलाबै
खिली गेलों फूलों कें चूमै-हँसाबै
बिना झूला के ही दै धक्का झुलाबै
हिलाबै छै झोली कें आमों रों ठारी
कभी देखी आबै छै सरसों रों क्यारी
छुवै फूल हौले बड़ी डरलों-डरलों
कहीं हरदियानों रँ बिरनी ही अड़लों

डरी कें उड़ै, तें ऊ तितली तक पहुँचै
बड़ी गुदगुदों देह पाबी कें हुमचै
कहीं जोगबारिन रों आँचल कें छूवी
कभी ओकरों गालों रों गड्ढा में डूबी
बढ़ावै छै विरहा रों आगिन कें आरू
'पिया पंथ ऐसे में कब तक निहारू'

वहाँ सें जाय पहुँचें छै आमों के वन में
कहाँ छै छनै में, कहाँ फेनू छन में
कभी मंजरी के रस नीचें चुआबै
कभी छेड़ी कोयल कें हेन्है चिढ़ाबै

घड़ी देर ठारी पर बैठी कें झूलै
ई देखी कें गेना कदम्बे रँ फूलै

बड़ी देर सें देखी रहलों छै खेला
मनारों के ऐंगन में फागुन रों मेला
जरा भी नै चिन्ता कि बीमारो ऊ छै
तपै देह, साँसो बहै जेना लू छै
उपासों सें लरपच रँ बत्ती छै भेलों
बहै देखै-देखै में कुव्वत कमैलों
नै हाथों में शक्ति, नै देहों में ताकत
हुऍ लागै छै साँसो लै में भी धतपत

लगै झुर्री, तांतों रों नोचलें रँ साड़ी
की चारो तरफ सें छै काँटों रों बाड़ी
उठै, तें ऊ पीपर रों पत्ता रँ डोलै
बसन्ती हवौं ओकरा बरियों रँ झोलै
मतुर कुछ नै चिन्ता छै गेना कें जरियो
की सेवा सें सब्भे के कम ऊ छै बरियो

लुभाभै छै गेना कें फूलों रों खिलबों
लता-फूल दोनों रों लिपटी कें मिलबों
कहीं फूल गोरों, कहीं लाल रत-रत
बहै छै हवा दक्खिनी चाल धतपत

कि झाँकै छै ठारी सें टूसा के पाँती
उतारी कें गल्ला सें जाड़ा रों गाँती
कहीं फूल खिललों सें जीरी छै निकलै
कहीं पीत पाखी एक गेना कें दिखलै
बड़ी शोख, चंचल; बसन्ती हवा रँ
कि मरता पर जेना मकरध्वज दवा रँ

हिलाबै छै गरदन, कहै टी-वी टुट-टुट
सुनी जेकरो बोली छै बेचैन झुरमुट

कि जन्नें भी गेना छै मूड़ी हिलाबै
वहीं रास गोकुल रों सिमटै-सुहाबै
सुहाबै गोबरधन रँ ठामे मनारो
कि जै पर बसन्तें मचाबै धूम आरो
बिछैलें छै फूलों रों कोनें बिछौना
कि के ऐतै ? फागुन में केकरो ई गौना
किनारी-किनारी में पत्ता रों झालर
की फूलों रँ मुखड़ा के नीचें में कालर

गिरै छै, बहै मोंद फूलों सें चूवी
कि दोना लै घूमै छै भौरा के जोगी
बजाबै छै मुँह सें जे शृंगी सुरों सें
सुनी कें ई तितली उड़ै छै डरों सें
सुगन्धित छै धरती की; सरंगो तक गमगम
पन्नी रों धूप चमकै, ज्यादा न कमकम

निहारी-निहारी कें गेना छै बेसुध
मतैलों रँ लागै, हेरैलों रँ सुधबुध
मने-मन विचारै छै बौंसी लें गेना
‘‘सिरिष्टी पर सजलों छै सरंगे ही जेना
बड़ा धन्य हम्में, यहाँ जन्म लेलौं
कि मिट्टी रों ई तन ई मिट्टी पर पैलौं
जहाँ देव-दानव भी आबै लें तरसै
जहाँ मोक्ष हेनै कें बरखा रँ बरसै
जहाँ चीर, चानन, सुखनियाँ बहै छै
किनारी-किनारी में पर्वत रहै छै

जे देखै में लागै छै; बौंसी ने मूड़ी
बनैलो छै कत्तें नी ब्रह्मा सें कूढ़ी

''सुहाबै छै पाँती में पर्वत पर फूलो
पिन्हैलें छै गल्ला में माला की ? एहो
कहीं कोन रँ के, कहीं कोन रँ के
मिलै फूल ढूँढ़ो जहाँ जोन रँ के
हवा जों छुवै छै तें अनचोके सिहरै
नवेली दुल्हैनी के लट्टो रँ लहरै'

''पहाड़ो के नीचें में चारो तरफ सें
सरोवर सुहाबै; गिरै मीन छप सें
वही बीच खिललो छै ढेरे कमल भी
कमल पर टिकुलिये रँ भौंरा रो दल भी
बड़ी साफ-सुथरा दिखाबै पापहरणी
कुमारियो के गालों सें चिकनो, सुवरणी
सरोवर में पर्वत मनारो के छाँही
की दूसरो कोय पर्वत छै पकड़ी के बाँही
की उठलो छै धरती सें आधों ही पर्वत''
विचारो पर गेना रो पड़लो छै आफत

''पहाड़ो के माथा पर विष्णु रो मन्दिर
वहीं से बही रहलो छै पानी झिर-झिर
बुझाबै छै गंगा जटा शिव सें निकली
बही रहलो छै नीचें एकदम सम्हली
की राधा ही चल्ली छै घेंरों सें निकली
पिया के विरह में बड़ी खीन-दुबली
बऔली छै पर्वत पर, पोखर में, वन में
जरी रहलो आगिन छै सौंसे बदन में !

बजै छै पहाड़ोॅ रोॅ भीतर मेॅ बाजा
महादेव के डमरू ? की मुरली मेॅ आ जा

बसन्तोॅ के भारोॅ सेॅ धरती छै लदबद
गिरै छै आकासोॅ सेॅ सुषमा की हदहद !
कहै छै—कभी भारती वन जे छेलै
वही आज आँखी मेॅ बरबक्ती हेलै
फिरू सेॅ फुललै की मालूर कानन ?
खुली गेलै केना केॅ सुषमा रोॅ बान्हन !''

बड़ी याद आबै छै गेना केॅ ऊ सब
''इस्कूली के पीछू सेॅ निकली केॅ झबझब
यहीं आबै देखै लेॅ फूलोॅ पर तितली
मतैली रसोॅ सें, ओंघैली रँ तितली
कभी बाँसबिट्टी सेॅ तोड़ै बँसबिट्टोॅ
झड़ाबै पहाड़ी लतामोॅ केॅ मीट्ठोॅ''
बड़ी याद आबै छै गेना केॅ ऊ सब
इस्कूली के पीछू सेॅ निकली केॅ झबझब

''ऊ भादोॅ रोॅ दिन मेॅ सुखनिया रोॅ बोहोॅ
मिलै अच्छा-अच्छा केॅ जै मेॅ नै थाहोॅ
कुदेॅ-धौंस मारै ऊ हेना-मेॅ-हेना
कि डाँड़ी मेॅ कूदै कोय बड़का ही जेना
बहै नाव नाँखी । कभी तोॅर हेनोॅ;
मछलिये रँ । उपलै कभी सोंस जेहनोॅ
हँकाबै, मतुर के सुनै माय केरोॅ
खड़ा देखै टुक-टुक सब साथी के जेरोॅ
बड़ी याद आबै छै गेना केॅ ऊ सब
ऊ भादोॅ के चानन मेॅ पानी रोॅ लबलब

''ऊ आसिन मे ँ कासो ॅ रो ॅ फुलबो ॅ-फुलैबो ॅ
इस्कूली से ँ भागी वहीं मे ँ नुकैबो ॅ
वहीं बैठी घरघोट खेला रो ॅ मंगल
कभी जोड़िये मे ँ की कुस्ती रो ॅ दंगल

'यही पापहरणी किनारी मे ँ अइयै
गुलेलो ॅ से ँ गोली की गनगन चलय्यै
कभी अट्ठागोटी, कभी नुक्काचोरी
कभी घघ्घो रानी, ते ॅ झुनझुन कटोरी
कबड्डी मे ँ लँघी से ँ हम्में नै डरियै
जरो सा नै खेलो ॅ मे ँ बेमानी करियै

''ऊ जेठो ॅ के लू खोललो ॅ, कड़कड़ैलो ॅ
अभी ताँय नै भुललो ॅ छी देह पड़पड़ैलो ॅ
''यही ठुठ्ठा पीपर रो ॅ गाछी तरो ॅ मे ँ
नुकाय के ॅ रहौं; जबकि सब्भे घरो ॅ मे ँ
यहाँ आबी साथी संग बकरी चरय्यै
कभी दू के ॅ सींगे धरी के ॅ लड़य्यै
अभी ताँय नै भुललो ॅ छी बकरी रो ॅ मे ँ-मे ँ
ई पीपर रो ॅ ठारी पर सुग्गा के टें-टें

''ते ॅ ढकमोरलो ॅ कत्ते ॅ रहै तखनी पीपर
बसन्ते से ँ अखनी छै कुछ पत्ता जै पर
यहीं आबी शुकरां की छोड़ै उदासी
यही ठहरै सब्भे सवासिन पियासी
दुलारी रो ॅ डोली यहीं रुकलो ॅ छेलै
अभी भी ऊ सूरत ई आँखी मे ँ हेलै
जमुनिया रँ । पानी मे ँ केकरौ से ँ ऊपर
सुशीलो ॅ-सुभावो ॅ मे ँ सब्भे से ँ सुन्नर

भरी दिन अकेली यही खिलखिलाबै
कभी बेर, जामुन कें तोड़ै-झड़ाबै
कभी हेन्हैं ढेपों सरोवर में मारै
कभी पापहरणी में मूँ कें निहारै
गुँजाबै पहाड़ों कें बोली 'दुलारी'
पहाड़ो भी बोलै वही रँ 'दुलारी'

''बसन्तों सें मोजरै जे आमों रों ठारी
टिकोलौं बुलाबै पुकारी-पुकारी
लगाबै बिछी जे टिकोला के कूरी
कभी फेनू ऐलै नै नैहर ऊ घूरी

''दुलारी रों डोली यही रुकलों छेलै
अभी भी ऊ सूरत ई आँखी में हेलै
बड़ी कपसी-कपसी कें डोली सें झाँकी
ई छाती में सुइया सौ गेलों छै गाँथी

''कहै छेलै—जामुन रों गाछी में राती
जरै छै बिलारों रों आँखी रँ बाती
डरों सें नै हिन्नें तें कोय्यो भी आबै
दुपहरियाँ भी आबै में बड़का भोआबै
दुलारी के गेला पर हम्में अकेलों
यही आबी राती की खोजियै ? हैरैलों

भरी दिन दुलारी रों यादों में गुमसुम
कभी अपनों ऐड़ी रँगय्यै मतरसुन
हँकय्यै, बुलैय्यै बताहा रँ केकरा
की सोची कें करियै हर चीजों में बखरा
कभी तोड़ी लय्यै पलाशों रों झुक्का
मतुर होश ऐला पर सपना सब फुक्का''

भरी ऐलै गना रोॅ आँखी मेँ आँसू
बड़ी पीर चोखोॅ, बड़ी पीर धाँसू

''बहैलोॅ छै अय्यो बसन्तोॅ रोॅ बोहोॅ
गिरै छै अकाशोॅ सेँ सुषमा की होॅ-होॅ
करै मोॅन कोयल रोॅ बोली मेँ बोली
चिढ़ाबौं भरी दम; अघैलोॅ, जी खोली

''पलाशोॅ रोॅ फुल्लोॅ छै की फूल पावन !
हथेली रँगैलोॅ ? की लट्ठी रोॅ कंगन ?
की कानी केॅ भेलोॅ छै आँखे ही रत-रत
बड़ी लाल; प्यारी दुलारी के ? की सत ?

''करै मोॅन सबटा पलाशे लै आनौं
जों बच्चा मेँ; होनै केॅ बालू केॅ खानौं
बनाबौं वही मेँ बड़ा घोॅर सुन्नर
सजाबौं दुआरी सेँ देहरी लै छप्पर''

निहारै छै गेना पलाशोॅ केॅ टक-टक
कभी प्राण हुलसै कभी प्राण हक-हक

थकी रहलै कोयल पुकारी-पुकारी
'कुहू तों कहाँ छोॅ 'दुलारी' दुलारो ?'
सुनी केॅ बड़ी प्राण गेना रोॅ हहरै
कलेजा कलेजा तक केन्हौं नै ठहरै

तभी बोली केकरो सुनी केॅ संभल्लै
पुजारी केॅ ऐतेॅ देखी केॅ बदललै

कहाँ सेँ बुझैलै हौ ताकत बदन मेँ
उठी केँ झुकी गेलै हुनकोँ चरन मेँ
भरी गेलै भावोँ सेँ; गदगद भै गेलै
पुजारी रोँ आँखी मेँ गंगा समैलै
उठै छै हृदय मेँ ऊ ममता के धूनी
भरी पाँजोँ गेना केँ लै लेलकै हुनी
समैलै आकाशोँ मेँ; जेनां हिमालै
समय दुख केँ हलकोरी चलनी सेँ चालै

गिरै छै पुजारी रोँ आँसू पीठी पर
भिंजै छै मतुर गेना भीतर-ही-भीतर
कहाँ गेलै हौ रँ बीमारी के आगिन
कहाँ गेलै उस्सठ रँ जिनगी रोँ धामिन
बुझाबै छै गेना केँ हेनोँ; नसोँ मेँ
बहै नै लहू; जेनां, चन्दन-रसोँ मेँ
कड़क मारी बिजली कोय देहोँ मेँ फैलै
शरीरोँ मेँ सृष्टि के सुषमा समैलै
बुझाबै पुजारी रोँ बोली भ्रमर रँ
लहर मारै गेना रोँ सौंसे ठो अंग-अंग

''सुनी केँ बीमारी के बेचैन भेलौं
खँड़ामो नै पिन्हलौं कि झबझब छी ऐलौं
खबर फैली गेलोँ छै बोहोँ रँ एकरोँ
सुनी केँ ई फाटै छै छाती नै केकरोँ !
सुफल करलौ जिनगी मनुक्खोँ रोँ ।आशीष !
कि तोरे ही जय-जय विराजै सभै दिश
यही धर्म देवोँ रोँ, मानव रोँ, सबके
कही गेलै हमरोँ सब पुरखें । आय ? कब के

''यही धर्मवाला महाकाल रों भी
सरों पर चढ़ी हाँसै–'दुनियाँ रों सेवी'
करी गेलौ कलयुग कें तोहें छों फीका
सुहाबौं ललाटों पर विजयी रों टीका
प्रभापूर्ण करलों छौ सौंसे जगत कें
कनक में मणि कूटी आरो रजत कें
कभी की प्रभा ई खतम होतै-जैतै
यही पर चढ़ी फेनू सतयुग नी ऐतै
समाजों रों, सब्भे रों सेवा जे करलौ
बनी कें तों विषहर जे विषधर कें हरलौ
सिखैलें छौ मानव कें मानव रों करतब
वहें देखौ चललों सब आबै छै झब-झब''

बढ़ी रहलों फूलों के बोहों रँ जन छै
शरद-चान हेनों ही गेना मगन छै
बहै छै पवन प्रेम रों मन में हू-हू
उठी गेलै दोनों ही अनचोके बाहू
उड़ी रहलों अम्बर तक फूलों रों रंग छै
अजब आय धरती रों दुल्हन के ढंग छै

खिली गेलै गेना रों सौंसे बदन में
करोड़ों कमल कखनी, केना कें क्षण में !
खुली गेलों मुन्हन छै अमरित कलश रों
चलै झटकवा चारो दिश सें छै रस रों
कि बरसो नै बरसै छै है रँ के हद-हद
भिंगी गेलों गेना छै अनहद तांय सरगद
कुहू रों मचै शोर मन रों वनों में
पिकी के, भ्रमर के रव, एक्के क्षणों में
बजाबै छै कौने ई वीणा कें गाबी
अभी राग दीपक तें मल्हार आभी ?

सुनै, बंद कोषोॅ मेँ भौंरा रँ, गेना
कन्हैया रोॅ वंशी केॅ राधा ही जेनां
दिखाबै छै दुख-दाख कन्हौं नै काँही !
बहारोॅ के सुषमा सब मन के ही छाँहीं !

(हरगीतिका छन्द)

अजगुत दिरिश सब लोग देखै आय की ई रही-रही
झूमै लता-फल-फूल-कोढ़ी बांही सब रोॅ गही-गही
एक असकललोॅ विरिछ पर अरबौं फुललौ छै फूल-फल
मकरन्द सनलो भौरा लागै, सूर्य । खिललोॅ, नभ, कमल

ढेरे किसिम के नीड़ सेँ शावक चिरै के हेरै छै
बीजू वनोॅ सेँ पी-कहाँ के टेर पपिहो टेरै छै
की रँ उमड़लोॅ खसलोॅ छै ई भीड़ देखबैय्या केरोॅ
गिरि-वन कें लाँघी-लाँघी कम्मोॅ छै की लंघबय्या केरोॅ

सधरोॅ सब कें भी फानलें नँगचावै जे; ऊ आय की ?
देखै जों बाधा-विपद, मारै रोर छै । अनठाय की ?
सब डैन-जोगिन देखी ई सब डर्है सें थर-थर करै
कृश काय गेना केरोॅ निरखी लोर आँखी सेँ झरै

लेकिन दुखोॅ रोॅ कोय छाया गेना मुख पर नै दिखै
जेना दिखै छै शांत गेना; भाग सब रोॅ विधि लिखै
सब लोग खाड़ोॅ भक्ति भरी-भरी सब्भे रही-रही जै करै
गेना कहै, ''सब लोग मिली-जुली सृष्टि मंगलमय करै''

(गीतिका छन्द)

"सब हँसें दुसरौ कें हक दौ–खिलखिलाबें, ऊ हँसें
सब हुएँ ठाढ़ो, जों दुष्टें एक कें भूलो डँसें
जे जहाँ छै सब बरोबर; पशु हुएँ या नर-त्रिया
देवता या दनुज जों कोय छै तें बस लै कें क्रिया

"ऊ जे लोभें या डरों सें सच नै बोलै, गुम रहै
आकि स्वारथवश ही खल कें साथ दै, ओकरे कहै
जे कि समता-समता कही-कही बस विषमता बाँचै छै
जे प्रवंचक, आत्मछलि जे, ऊ की जन कें जाँचै छै

"भेद-बुद्धि बढ़ला सें छै भेदो, कल्हों-कचकचों
तोंय तरत्थी कें रँगों आगिन सें नै । मेंहदी रचों
स्वर्गो सें सुन्नर भुवन ई; वेदो तक है गाबै छै
हम्मी नै पुरखौं पुरातन युग सें कहलें आबै छै

"आपनों माँटी लें, जन लें, जान-जी सब धूले रँ
एतनै नें, सौंसे भुवन रों लोग लागें फूले रँ
आरो जे सौदा करै ई फूल रों; दुश्मन वही
जे सँहारें हेनों दुश्मन–नर वही, पावन वही

''मनुष-सेवा सेँ बढ़ी केॅ धरमो नै, दरशन नै छै
की ? कहाँ छै धर्म-दर्शन ? देवतौं ? जों जन नै छै
आदमी अमृत-विभासुत, देवता कलि कल्प रोॅ
आदमी जागेॅ तेॅ की तक्षक ? की गेहुअन ?अधसरोॅ ?

''आदमी रोॅ मैल धोवेॅ—धरम ई गंगा हुएॅ
ठेलोॅ नै नर केॅ नरक मेँ; स्वर्ग केॅ आबेॅ छुएॅ
आदमी छै पहलेॅ तभिये धर्म रोॅ खाता-बही
जों मनुष हो जाय एक तेॅ धर्म दू रहतै ई की ?

''जों मिलै मेँ धर्म बाधा; धरम की ? ई जात की ?
जे मनुष मानै छै सब मेँ भेद केॅ—ऊ पातकी
देवते नी आदमी रोॅ रूप धरी-धरी आबै छै
आरो नर रोॅ दुश्मनोॅ केॅ देवतौ नै भावै छै

''पाप रोॅ व्यापार-सौदा सब क्षणिक छै, बुलबुला
आदमी छोड़ेॅ नै श्रम केॅ, न्याय छै हाकिम तुला
शुद्ध ज्ञानोॅ सेँ, धरम सेँ, राजा रोॅ चित शुद्ध सेँ
ई सिरिष्टी बनतै फेनू स्वर्ग नानक-बुद्ध सेँ''

ई कही चुप भेलै गेना; स्वर मतुर सगरो फिरै
वायु रोॅ चंचल लहर पर वाणी रोॅ हंसनी तिरै
जेनोॅ कि मणि-खंभ पर माणिक जड़ित, छै सबरोॅ मुख
दुख हटी गेलोॅ छै सबसेँ भींगे पोरे पोर सुख
सब रोॅ बीचोॅ मेँ होनै केॅ आय गेना शोभै छै
झीर-नद-मंदार, गंग-अजगैवी जेनोॅ भाबै छै ।

■■■